डाक पंजीयन संख्याः एडी.306/2006–08 वर्ष 6, अंक 9, इलाहाबाद जून 2009

R.N.I.N0.-UPHIN2001/8380

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

# विश्वस्नेहसमाज

कीमत 5 रुपये

खुशहाल दाम्पत्य के लिए जरुरी है आपसी सामजस्य

## फर्जी डॉक्टर

## चार कहानिया

## पर्यावरण की रक्षा के लिए युवकों को आगे आना चाहिए

# अंग्रेजी से नहीं, अंग्रेजियत से विरोध है

# सुश्री मायावती में है दम, तभी भरती है दम्भ

# बाल काव्य प्रतियोगिता

**आयोजकः विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद एवं हि.मा. 'विश्व स्नेह समाज**

1. इस प्रतियोगिता में *10 से 18 वर्ष की उम्र* का कोई भी बाल कवि/कवित्रि भाग ले सकता/सकती है.
2. प्रतिभागी को अपने छायाचित्र के साथ जीवन परिचय व वह रचना भेजनी होगी जिसे वह प्रतियोगिता में पढ़ना चाहता है.
3. रचना पर "*यह मेरी मौलिक रचना है*" लिखना व नाम, पता लिखना अनिवार्य होगा.
4. यह प्रतियोगिता *फरवरी 2010 में इलाहाबाद* में आयोजित की जाएगी.
5. अपनी प्रविष्टि हमें *30 नवम्बर 2009* के पूर्व जबाबी लिफाफे के साथ भेजें.

**लिखें:**
**सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,**
एल.आई.जी-६३, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,
इलाहाबाद, **मो०:** ०६३३५१५५६४६

## कल, आज और कल भी बहुपयोगी

'विश्व स्नेह समाज' के पाठकों को विशेष तोहफा. घर बैठे प्राप्त करें वर्ष भर में १२ अंक अपनी प्रिय मासिक पत्रिका

विशेष सदस्यता योजना में भाग लीजिए, अपने नाम, पता के साथ निम्न पते पर भेजें- **संपादक, 'विश्व स्नेह समाज', एल.आई.जी-१३, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११**

लोकप्रिय हिन्दी सामाजिक मासिक पत्रिका

**स्नेह समाज**

**एक प्रति**:रु०५/– **विशिष्ट सदस्य**:रु० १००/– **द्विवार्षिक सदस्यता**:रु०११०/–**पाच वर्ष**–रु०२६०/– **दस वर्ष**:रू०५००/– **आजीवन सदस्य**:रु०१००१/– **संरक्षक सदस्य**:रु० २५००/–

☞ विशिष्ट सदस्यों का संचित्र संक्षिप्त परिचय एक बार प्रकाशित किया जाएगा.

☞ आजीवन सदस्यों का पूर्ण जीवन परिचय सचित्र एक बार तथा प्रत्येक वर्ष 2/3 कॉलम का विज्ञापन /संदेश निःशुल्क प्रकाशित किया जाएगा.

☞ संरक्षक सदस्यों का एक बार पूर्ण जीवन परिचय, प्रत्येक वर्ष 2/3 का विज्ञापन/संदेश निःशुल्क प्रकाशित किया जाएगा तथा उपहार स्वरुप प्रत्येक वर्ष अलग से 200रु0 तक की पुस्तकें भेंट की जाएगी.

**अपनी बात**

लोकप्रिय हिन्दी सामाजिक मासिक पत्रिका

जुन 09



प्रधान सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी


# कोचिंग सेंटरो पर भी लगाम कसनी चाहिए

कुछ सालों से तकनीकी पाठ्यक्रमों में प्रवेश पाना काफी कठिन होता जा रहा है. जिससे प्रवेश परीक्षा की तैयारी कराने वाले कोचिंग क्लाशों की मांग काफी बढ़ गयी है. हर गली, मोहल्लों में ऐसे संस्थान आसानी से देखे जा सकते हैं. इन संस्थानों में फीस के तौर पर मोटी रकम वसूली जाती है, जिससे अभिभावकों पर अत्यधिक वित्तीय बोझ बढ़ जाता है. बीच में छात्र द्वारा कक्षा छोड़ देने पर फीस भी रिफंड नहीं की जाती. अभिभावक अपने बच्चों को इस उम्मीद से भेजते हैं कि उनका लड़का बेहतर तैयारी कर दाखिला पा लेगा. पूर्व प्रवेश परीक्षा की तैयारी की मांग को देखते हुए देश में एक कोचिंग उद्योग स्थापित हो चुका है. लेकिन लचर नियम व कानूनों के चलते ज्यादतर कोचिंग संस्थान अपने वादे के अनुरुप पढ़ाई नहीं कराते. इतना ही नहीं, इनमें से कुछ संस्थान गलत जानकारी देकर विद्यार्थियों को दिग्भ्रमित भी करते हैं.

एमआरटीपीसी ने कई मौकों पर ऐसे संस्थानों को भ्रामक विज्ञापनों के प्रति सेचत किया है. संसद सदस्य मोहन सिंह ने इस उद्योग के नियमन के लिए लोकसभा में एक निजी विधेयक 'दि प्री एक्समिनेशन कोचिंग सेंटर्स रेगुलेटरी अथॉरिटी बिल' नाम से एक नियामक प्राधिकरण स्थापित करने की मांग की थी. विधेयक में यह सुझाव था एक नियामक आयोग का गठन कर इसका मुख्यालय दिल्ली में और इसके कार्यालय प्रत्येक राज्यों में हो, जिससे कोचिंग सेंटरों का नियमन किया जा सके. इसमें कोचिंग सेंटरों को मान्यता देना, उनके द्वारा लिए जाने वाले शुल्क का ढांचा तय करना, विभिन्न कोर्सो के लिए क्लासरुम लेक्चरर की न्यूनतम संख्या तय करना और कोचिंग सेंटरो में नियुक्त किये जाने वाले अध्यापकों की न्यूनतम योग्यता तय करना शामिल है. विधेयक में कानून का उल्लंघन करने वाले कोचिंग सेंटरों को दंड देने की भी सिफारिश की गई है. यद्यपि निजी विधेयक पास नहीं हो पाते हैं. लेकिन केन्द्र/राज्य सरकार को इस मुद्दे पर गंभीरता पूर्वक विचार करना चाहिए. विद्यार्थियों व अभिभावको को भी ऐसी मांग करनी चाहिए कि इन कोंचिग सेंटरो द्वारा विद्यार्थियों और अभिभावकों पर किसी तरह के नियम और शर्ते नहीं थोपी नहीं जानी चाहिए.

यदि कोंचिग सेंटर झूठे दावे करते है और वायदे के मुताबिक गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने में विफल रहते हैं तो विद्याथी और उनके अभिभावक कंज्यूमर कोर्ट में जा सकते हैं. कई ऐसे मामलों में कंज्यूमर कोर्ट ने विद्यार्थियों को मुआवजा दिलाया है. लेकिन विद्यार्थी सावधानी से कोचिंग सेंटरो का चयन करें और उसमें शामिल होने से पहले नियम और शर्तो को ध्यानपूर्वक जरुर पढ़ लें.


**सम्पादकीय कार्यालयः**

एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद



कानाफुसीः 09335155949

ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com


**आवश्यक सूचनाः**


1.पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायालय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।


**अंदर पढ़िए**


प्रेरक प्रसंग– 4
मायावती में है दम– 5
सुश्री बहन के मंत्री व विभाग–6
फर्जी डॉक्टर–7
अंग्रेजी से नहीं, अंग्रेजियत से विरोध है–9
पर्यावरण की रक्षा के लिए....10
खुशहाल दाम्पत्य के लिए जरुरी है. आपसी सामजस्य–11
इलाहाबाद में ही पैदा हुए थे संभाजी के गुरु–16
स्नेह बालमंच–26
मघा में जन्में होते है जिम्मेवार–28
बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी श्री अजामिल जी– 18
साहित्य समाचार– 26,30
व्यंग्य– 19
अध्यात्म– 22
कहानी– 13,23,
लघु कथा–21,32
चिट्ठी आई है– 29,
स्वास्थ्य– 31
जरा हंस दो मेरे भाय–33
समीक्षा– 34
कविताएं– 12,15,20,24,25,27,32

## जब तक जड़े न बढ़ेगी पेड़ के बढ़ने की आशा कैसे की जा सकती है

*जापान में जहाॅ देवदारु के पेड़ तीन-चार सौ फीट तक ऊंचे होते हे, वहाॅ कुछ ऐसे भी होते हैं, जो बहुत पुरोने होने पर भी दो-चार फीट के ही रह जाते हे. इन बौने पेड़ों के बारे में मुझे बड़ा अचंभा हुआ और उनके न बढ़ने का कारण मालुम किया तो बताया गया कि जापानी लोग जान-बूझकर कुतूहलवश इन्हें छोटा बनाए रहते है, अपनी कारिस्तानी से बढ़ने नहीं देते. करिस्तानी यह कि वे पेड़ की टहनियों और पत्तों को जरा भी नहीं छेड़ते, पर उसकी जड़ों को जमीन में बढ़ने नहीं देते और उनकी बराबर काट-छॉट करते रहते हैं. इनसानों में से अनेक ऐसे होते है, जिन्हें बहुत छोटा या ओछा कहा जाता है. जापान के देवदारु पेड़ों की तरह उनकी भी जड़े भीतर कटती रहती हैं और वे बौनी जिंदगी बिताते रहते है. जो पेड़ बढ़ना और फलना-फूलना चाहता है, उसकी जड़ों को गहराई तक जाना जरुरी है. जो मनुष्य उन्नतिशील बनना चाहता है, उसकी जड़ों को गहराई तक जाना जरुरी है. जो मनुष्य उन्नतिशील बनना चाहता है, उसके लिए यही उचित है कि अंतरात्मा की जमीन में सदगुणों की जड़ों को निरंतर बढ़ाता चले, जब तक जड़े न बढ़ेगी पेड़ के बढ़ने और फलने फूलने की आशा कैसे की जा सकती है.*

+++++++++++++++++++++++++

## जीने के तख्तों का प्रयोग ऊपर चढ़ने के लिए करें

*जो मनुष्य ज्ञान-विज्ञान की तह में पहुॅचने के लिए पढ़ता है, उसके लिए पुस्तकें और पढ़ाई जीने के तख्तों की तरह है, जिन पर से होकर वह ऊपर चढ़ता है. जो सीढ़ी वह चढ़ चुकता है, उसे पीछे छोड़ देता है, लेकिन अधिकांश मनुष्य, जो अपने दिमाग को तथ्यों से भरने के लिए ही पढ़ते है, जीने के तख्तों का उपयोग ऊपर चढ़ने के लिए नहीं करते, बल्कि उन्हें उखाड़कर अपने कंधों पर रख लेते हैं, ताकि उन्हें उठाए-उठाए फिर सकें और बोझ ढोने का आनंद ले सके. ये लोग नीचे ही रह जाते है, क्योंकि जो चीज उन्हें ढ़ोने के लिए बनी थी, उसे वे स्वयं ढोने लगते हैं.*

+++++++++++++++++++++++++

## बाबा-पोता सम्वाद

*पितामह कवीश-आपने कवीश वाणी पुस्तक कवियों को निःशुल्क बांटा. इसमें आपने क्या क्या छपाया?*

*उत्तर- यहि महं रघुपति नाम उदारा....*

*प्र. नाम करता क्या है? हम सबको इसका क्या लाभ?*

*उ. नाम, मंगल भवन अमंगल हारी है... और इस राम नाम जप से धर्म अर्थ काम मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है. 'साधक नाम जपहि लय लाये. होहिं सिद्ध अनिमादिक पाये..*

*प्र. आपने जय हनुमान छपी पुस्तक की भी सभी प्रतियां समाप्त हो गई. इसमें आपने लिखा है मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने ग्यारह हजार वर्ष तक लगातार आदर्श राज्य शासन किया. यह अवधि ा अधिक है इस अवधि का पता आपको कैसे चला?*

*उ0 42 वर्ष की आयु में राम ने अवध की राजगद्दी ग्रहण की. सर्वप्रथम संस्कृत महाकाव्य बाल्मीकी रामायण के प्रथम सर्ग में ही 11000 वर्ष तक राम के राज्य करने की अवधि लिखी है. श्लोक सुनो-*

*दशवर्ष सहस्राणि दश वर्ष शतानि च।*
*रामो राजमुपासित्वा ब्रहमलोकं प्रयास्यति।..*

*अरे यह समय तो अल्प है कम है...... प्रभु राम के पिता राजा दशरथ की आयु 60027 वर्ष कही गई है. यह भी कम अवधि है.*

## आदाब अर्ज

मुश्किल से मिलता कभी, कहीं किसी को प्यार।
मान उसे परमात्मा, करे जो सच्चा प्यार।।

चन्दा सबका देवता, करें सभी स्वीकार।
पुजता करवा चौथ को, चॉद ईंद आधार।।

**वी.के.अग्रवाल**, बरेली, उ.प्र.

अध्यापिका से मुख्यमंत्री की कुर्सी तक चौथी बार पहुंची सुश्री मायावती का सफरनामा

# सुश्री मायावती में है दम, तभी भरती है दम्भ

दिल्ली के लेडी होर्डिंग अस्पताल (श्रीमती सुचेता कृपलानी अस्पताल) में १५ जनवरी १९५६ को जन्मी बहन सुश्री मायावती के पिता श्री प्रभुदयाल मूलतः उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद के निकट बुलन्दशहर मार्ग के जीटी रोड पर स्थित बादलपुर गांव के रहने वाले थे. लेकिन दिल्ली में नौकरी करते थे. पहले बादलपुर गांव बुलंदशहर जिले में था लेकिन अब गाजियाबाद जिले में हैं. श्री प्रभुदयाल डाक एवं तार विभाग दिल्ली में सुपरवाइजर थे. मायावती की अधिकांश शिक्षा दिल्ली में हुई. सुश्री बहनजी ने स्नातक तथा एल.एल.बी कालिंदी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली से उत्तीर्ण की. दिल्ली विश्वविद्यालय से बी.एड भी किया. १९७७ से १९८४ तक दिल्ली प्रशासन द्वारा चलाए जा रहे स्कूलों में अध्यापन कार्य भी किया. छात्र जीवन में स्कूल-कालेज की विभिन्न वाद-विवाद प्रतियोगिताओं तथा छात्र आंदोलनों में भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने वाली सुश्री मायावती एक नागरिक की हैसियत से अपने अधिकारों तथा कर्तव्यों के प्रति भी सदैव जागरुक रहीं. समाज के शोषित एवं पीड़ित वर्ग के प्रति गहन संवेदना के कारण वह १९८४ में अध्यापन कार्य छोड़कर सक्रिय राजनीति में कूद पड़ी.

इससे पूर्व बसपा के संस्थापक स्व० काशीराम के संपर्क में आने पर वह बामसेफ तथा १९८१ में स्थापित डी.एस.फोर दलित शोषित समाज संघर्ष समिति जैसे गैर राजनीतिक संगठनों में भी सक्रिय रहीं. १४ अप्रैल १९८४ को बसपा की स्थापना के साथ ही पार्टी उम्मीदवार के रुप में उन्होंने १९८४ में कैराना-मुजफ्फरनगर सीट से लोकसभा का चुनाव, १९८५ में बिजनौर से लोकसभा का उपचुनाव तथा १९८७ ई में हरिद्वार से लोकसभा का उपचुनाव लड़ा तथा १९८७ में हरिद्वार के उपचुनाव में लगभग १.३८ लाख मत पाकर वह दूसरे नम्बर पर रहीं. जबकि १९८९ के आम चुनाव में बिजनौर से पहली बार चुनाव जीतकर संसद में पहुंची तथा १९९४ में उत्तर प्रदेश से राज्यसभा सदस्य चुनी गई. अक्टूबर १९९६ में हुई विधानसभा चुनाव में बहन जी विल्सी-बदायूं, हरौरा-सहारनपुर दोनों विधानसभा क्षेत्रों से निर्वाचित हुई. बाद में उन्होंने विल्सी सीट छोड़ दी. सुश्री मायावती पहली बार मुख्यमंत्री ३ जून १९९५ को बनी थी तथा १७ अक्टूबर १९९७ में उन्होंने दूसरी बार मुख्यमंत्री पद संभाला और ६ माह तक इस पद पर रहीं. मायावती १९९८ के लोकसभा चुनाव में अकबरपुर संसदीय सीट से सांसद निर्वाचित हुई. १९९९ में फिर इसी सीट से लोकसभा के लिए निर्वाचित हुई. २००२ के यूपी विधानसभा चुनाव के बाद एक बार फिर बसपा अध्यक्ष ने अपनी सूझ-बूझ का परिचय दिया और भाजपा के समर्थन से साझा सरकार की मुख्यमंत्री (मई ०२ से अगस्त ०३) बनने में सफल रही. मई में हुए २००४ के लोकसभा चुनाव में बसपा अध्यक्ष ने एकबार फिर उ.प्र. की अकबरपुर सीट से पर्चा भरा और जीत हासिल की. लेकिन जुलाई महीने में संसद की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया और अगस्त २००४ में राज्यसभा के लिए चुनी गई. साहूजी अवार्ड-१९९७, के वीरामल सोशल जस्टिस अवार्ड-२००० से सम्मानित बसपा अध्यक्ष ने 'बहुजन समाज और उसकी राजनीति' नामक किताब भी लिखी है. बहुजन समाज पार्टी के संस्थापक कांशीराम के अस्वस्थ हो जाने और उनके द्वारा मायावती को उत्ताधिकारी घोषित करने के बाद मायावती २३ सितंबर २००३ से पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष के स्वरुप में आई. २००७ के यूपी विधानसभा चुनाव में मायावती ने खुद को और पूरी पार्टी को हर पल बदला है. व्यवहार, भाषा, शैली, रणनीति, मुद्दे, कार्यकर्ताओं के साथ विश्वास और नये समाज को पार्टी से जोड़ने की मुहिम में बदलाव लाकर बहुजन को सर्वजन में बदल लिया. सबसे बड़ी खासियत यह रही कि बहन जी ने गत वर्षो में राजनीति में अछूत समझे जाने वाले ब्राहमण वर्ग को खुलेआम छूत बना दिया. उन्होंने अपने पार्टी के नारे-'तिलक, तराजू और तलवार, इनको मारो जूते चार' के नारे को बदल डाला. 'यह हाथी नहीं गणेश, ब्रहमा, विष्णु, महेश है. जैसे नारे दिये. ब्राहमण वर्ग को कुल सीटों में से लगभग २१ प्रतिशत सीट पर उम्मीदवारी दी. अपने मंत्रीमंडल में भी अच्छी जगह दी. यह उनके कुर्सी व भविष्य के लिए काफी मददगार साबित होगा. उन्होंने अपने परम्परागत वोटो के साथ ही साथ ब्राहमण, क्षत्रिय, वैश्य, व मुस्लिम वर्ग को भी जोड़ने का प्रयास किया. लेकिन उनके लिए मददगार ब्राहमण व शुद्र वर्ग ही रहा जो पूर्ण बहुमत के साथ कुर्सी मिली.

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

# सुश्री बहन जी के मंत्री व उनके विभाग

**कु० मायावती**

मुख्यमंत्री, सामान्य प्रशासन, सचिवालय प्रशासन, गृह, गोपन, सतर्कता, नियुक्ति, कार्मिक, वित्त, न्याय, विधायी, नियोजन, अर्थ एवं संख्या, प्रोटोकाल, नागरिक उड्डयन, राज्य संपत्ति, उत्तर प्रदेश पुनर्गठन, समन्वय, वस्त्रोद्योग, रेशम उद्योग, राजनैतिक पेंशन, भाषा, खाद्य प्रसंस्करण, बाहय सहायतित परियोजना, नागरिक सुरक्षा, औद्योगिक विकास, प्रशासनिक सुधार, खादी एवं ग्रामोद्योग, कार्यक्रम कार्यान्वयन, राष्ट्रीय एकीकरण, कृषि अनुसंधान, धमार्थ कार्य, मुस्लिम वक्फ, होमगाड्र्स, प्रांतीय रक्षा दल, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, इलेक्ट्रानिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी, समन्वय, कृषि विदेश व्यापार, कृषि निर्यात, सार्वजनिक उद्यम, परिवार कल्याण, मातृ एवं शिशु कल्याण, अवस्थापना विकास

**सतीश चंद्र मिश्रा**

मुख्यमंत्री से संबद्ध

**नसीमुद्दीन सिद्दीकी**

आबकारी, मद्य निषेध, लोकनिर्माण, सिचाई, बाढ़ नियंत्रण, आवास एवं शहरी नियोजन, नगर भूमि, गन्ना विकास, चीनी मिलें

**रामवीर उपाध्याय**

ऊर्जा, ग्रामीण समग्र विकास

**लालजी वर्मा**

संसदीय कार्य, चिकित्सा शिक्षा, विकलांग कल्याण

**इंद्रजीत सरोज**

समाज कल्याण (अनुसूचित जाति एवं जनजाति कल्याण को छोड़कर), महिला कल्याण, बाल विकास वं पुष्टाहार, कृषि विपणन

**ठाकुर जयवीर सिंह**

माध्यमिक शिक्षा

**स्वामी प्रसाद मौर्य**

राजस्व, अभाव, सहायता एवं पुनर्वासन

**वेद राम भाटी**-श्रम, सेवायोजन

**लक्ष्मी नारायण**

कृषि (कृषि विदेश व्यापार एवं कृषि निर्यात तथा कृषि विपणन को छोड़कर)

**राकेश धर त्रिपाठी**-उच्च शिक्षा

**बाबू सिंह कुशवाहा**

भूतत्व एवं खनिकर्म, पंचायती राज

**जगदीश नारायण राय**

स्टांप तथा न्यायालय शुल्क, पंजीयन

**फागू चौहान**

कारागार प्रशासन एवं सुधार

**नकुल दुबे**

नगर विकास, जल संपूर्ति, पर्यावरण, संस्कृति, शहरी समग्र विकास, संस्थागत वित्त, कर एवं निबंधन (स्टांप तथा न्यायालय शुल्क को छोड़कर), मनोरंजन कर दद्दू प्रसाद ग्राम्य विकास

**नरायन सिंह**- उद्यान

**सुधीर गोयल**- सूचना

**राम प्रसाद चौधरी**

खाद्य एवं रसद, नागरिक आपूर्ति, किराया नियंत्रण

**डॉ. धर्म सिंह सैनी**-बेसिक शिक्षा

---

## राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार)

**रामअचल राजभर**-परिवहन

**अनीस अहमद खां**-

अल्पसंख्यक कल्याण, हज

**अयोध्या प्रसाद पाल**

खेलकूद, युवा कल्याण

**जमुना निषाद**-मत्स्य, सैनिक कल्याण

**श्रीमती ओमवती**-प्राविधिक शिक्षा

**बादशाह सिंह**-लघु उद्योग

**रंगनाथ मिश्र**-ग्रामीण अभियंत्रण सेवा

**विनोद कुमार**-पर्यटन

**फतेह बहादुर**-वन, जन्तु उद्यान

**लखीराम नागर**-लघु सिचाई

**अवधेश कुमार वर्मा**-

पिछड़ा वर्ग कल्याण

**रघुनाथ प्रसाद**

भूमि विकास एवं जल संसाधन (परती भूमि विकास को छोड़कर)

**रामहेत**-निर्वाचन

**रामपाल वर्मा**-परती भूमि विकास

**अनंत कुमार मिश्रा**

स्वास्थ्य एवं चिकित्सा, सहकारिता

**अवधपाल सिंह यादव**

पशुधन, दुग्ध विकास

**अकबर हुसैन**-अतिरिक्त उर्जा स्रोत

**सदल प्रसाद**

अनुसूचित जाति एवं जनजाति कल्याण

**यशवंत**

नगरीय रोजगार एवं गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम

**रतनलाल अहिरवार**

अंबेडकर ग्राम विकास

---

## राज्य मंत्री

**संग्राम सिंह**-खादी एवं ग्रामोद्योग

**अब्दुल मन्नान**

कृषि विदेश व्यापार कर कृषि निर्यात

**योगराज सिंह**

कृषि शिक्षा एवं कृषि अनुसंधान

**श्रीमती विद्या चौधरी**-वित्त

**राजेश तिवारी**

चिकित्सा शिक्षा मंत्री तथा धर्माथकार्य

**सहजिल इस्लाम अंसारी**

मुस्लिम वक्फ

**दद्दन मिश्रा**-चिकित्सा शिक्षा

**हरिओम**

होमगाड्र्स एवं प्रांतीय रक्षा दल

**यशपाल सिंह**

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

## खुलासा

# फर्जी डॉक्टर

वीके खुल्लर, अखिल भारतीय आयुर्वेद सेवा संघ, दिल्ली

**कुछ नीम हकीमों से जब आर.एम.पी. का अर्थ पूछा गया तो उन्होंने इसका अर्थ-रुरल मेडिकल प्रेक्टिशनर, रेगुलर मेडिकल प्रेक्टिशनर, रजिस्टर्ड मैग्नेट फिजिशियन बताया और उनके पास ऐसे ही प्रमाण पत्र भी थे.**

आज भारत के प्रायः बड़े-बड़े राज्य स्तर के दैनिकों में 'सुनहरा मौका' शीर्षक के अन्तर्गत विभिन्न संस्थाओं के विज्ञापन हर रोज प्रकाशित हो रहे हैं जो कानून का सीधा उलंघन तो करते ही है अत्यंत संदेहास्पद चरित्र के भी है. आज दिल्ली, मुंबई, पटना, लखनऊ आदि शहरों में बहुत सी संस्थायें आर.एम.पी. के प्रमाण पत्र खुलेआम बेच रही है.

शिक्षण संस्थाओं द्वारा किसी विशेष पाठयक्रम गलत नहीं लेकिन जब ये ही संस्थायें 'पत्राचार द्वारा डॉक्टर बनें', 'वैद्य विशारद पास कर आर.एम.पी. डॉक्टर बनें', 'पत्राचार द्वारा डिग्री प्राप्त करें' आदि प्रलोभन भरे विज्ञापन देती है जो अल्प शिक्षा दर वाले भारतीय समाज के लिए अत्यंत घातक एवं गुमराह करने वाले सिद्ध हो रहे है.

अपने देश में डॉक्टरी डिग्री देने का अधिकार सिर्फ उन्हीं विद्यालयों को है जिनके पाठयक्रम को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त है. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग सिर्फ उन्हीं संस्थाओं को मान्यता देता है जो उनके मानदंडो पर सही उतरते हैं. उसमें कहीं भी उपाधियां इतनी सुलभ नहीं है और नहीं ६ महीने या १ वर्ष में पत्राचार द्वारा डॉक्टरी पास करने का ही प्राविधान है.

कुछ संस्थायें आयुर्वेद एवं यूनानी चिकित्सा परिषद, बिहार से झूठे एवं नकली प्रमाणपत्रों के आधार पर पंजीकरण करवाकर दे रही है. व्यक्ति चाहे अगूठाटेक ही क्यों न हो उसका रजिस्ट्रेशन भी ५०० रुपये से १००० रुपये में बनवा देते है. बिहार सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय ने हमारे लिखने के बावजूद कार्रवाई नहीं की.

बिहार एवं उत्तर प्रदेश में इलैक्ट्रो होम्योपैथिक के नाम पर लोगों को गुमराह करके उनका आर.एम.पी. में रजिस्ट्रेशन किया जा रहा है. जो कि मान्यता नहीं है. दर्जनों निजी संस्थायें इलैक्ट्रो होम्योपैथी के नाम पर २ वर्षीय कार्यक्रम चला रही है और लोगों को गुमराह कर रही है.

इस तरह की संस्थायें हर साल हजारों अल्प शिक्षित युवकों को अपने जाल में फँसाती है. फिर ये ही अधकचरे लोग अपनी बोगस डिग्रीयों का रोब दिखाकर आम जनता को धोखा देते हैं.

कुछ धोखेबाज संस्थानों ने सरकारी नामों से मिलती जुलती संस्थायें बना रखी है जो लोगों को गुमराह कर रही है देखिए-

असली संस्थान है-सैंट्रल कौंसिल ऑफ इन्डियन मेडिसन, नकली नाम मिलते जुलते जो आर.एम.पी के प्रमाणपत्र बेचती है.

१. सेन्ट्रल कौसिल ऑफ एलोपैथिक प्रेक्टिशनरर्स

२. सेन्ट्रल कौसिल ऑफ मेडिकल प्रेक्टिशनर

३. सेन्ट्रल कौसिल ऑफ मेडिकल स्टडीज

४. सेन्ट्रल कौसिल ऑफ रजिस्टर्ड मेडिकल प्रेक्टिशनरर्स

५. सेन्ट्रल कौसिल ऑफ आयुर्वेदिक मेडिसीन्स

६. द इण्डियन मेडिसीन सेन्ट्रल कौसिंल

इसी प्रकार वास्तविक नाम है-सेन्ट्रल बोर्ड ऑफ सेकण्डरी एजुकेशन नकली नाम देखिए-

१. सेन्ट्रल बोर्ड ऑफ सेकण्डरी एजुकेशन

२.सेकण्डरी एजुकेशन बोर्ड

३.सेन्ट्रल बोर्ड ऑफ हाई एजुकेशन आदि -आदि.

ग्रामीण एवं पिछड़े इलाके से लेकर बड़े-बड़े शहरों तक आजकल ऐसे फर्जी डॉक्टर अपनी दुकान लगाए बैठे हैं. पर इनकी जॉच पड़ताल करने वाली कोई सरकारी व्यवस्था नहीं है. आखिर मौत के इन सौदागरों की इन गतिविधियों पर रोक न लगा पाने का कारण क्या है?

१. क्योंकि इन फर्जी डॉक्टरों पर सीधे कोई कार्यवाही नहीं की जा सकती. पहले इनका तथाकथित प्रमाण-पत्र सम्बन्धित बोर्ड को भेजा जाता है और नकली होने की पुष्टि के बाद मामला प्रशासन के गृह विभाग को दे दिया जाता है. गृह विभाग मामले को पुलिस की अपराध शाखा को सौप देता है- तब कहीं कार्यवाही सम्भव हो पाती है.

२.वर्तमान कानून इतना प्रभावशाली नहीं है. जैसे उत्तर प्रदेश सरकार ने ०२.०७.८२ से प्राइवेट होम्योपैथिक एवं आयुर्वेदिक शिक्षण संस्थाओं पर प्रतिबंध लगा दिया है. फिर भी उत्तर प्रदेश की प्राइवेट संस्थाओं के विज्ञापन दैनिक समाचारपत्रों में प्रकाशित हो रहे हैं.

३. सरकार ने इस मामले को कभी

गंभीरता से नहीं लिया. जब केन्द्रीय परिषद ने स्पष्ट कर दिया है कि प्रांतीय बोर्ड केवल उन वैद्यों को ही रजिस्टर्ड करे जिनकी योग्यता अधिनियम १६७० के अंतर्गत हो. इसके बावजूद भी बिहार, राजस्थान, मध्यप्रदेश के बोर्ड इस आदेश का स्पष्टतः उलंघन कर रहे है और वैद्य विशारद पास लोगों का पंजीकरण कर रहे हैं.

४. दिल्ली पुलिस ने एक डिग्री विक्रेता को बंदी भी बनाया था जो कि कला संस्कृति साहित्यार्वेद के नाम पर उपाधियॉ बेचता था. लेकिन पुलिस आज तक उसे आरोप पत्र नहीं दे सकी है.

गॉव और कस्बों में घूमने वाले फर्जी डाक्टर ऐसी ही संस्थाओं के शिष्य होते हैं. यह कितनी बड़ी विडम्बना है कि भारतीय चिकित्सा केन्द्रीय परिषद आजकल इस आशय का विज्ञापन देती है कि फलॉ फलॉ संस्थायें मान्यता प्राप्त नहीं हैं. इसलिए उनके द्वारा प्रदत्त डिग्रीयॉ वैध नहीं है. जैसे हिंदी साहित्य सम्मेलन की वैद्य विशारद या आयुर्वेद रत्न. भारत सरकार का स्वास्थ्य मंत्रालय इसे केवल १६६७ तक मान्यता देता है. लेकिन इसके बावजूद भी आप विज्ञापन पढ़ते हैं कि मान्यता प्राप्त वैद्य विशारद करके आर.एम.पी. डॉक्टर बनें. अतः लोगों का ध्यान भारतीय चिकित्सा केन्द्रीय परिषद अधिनियम १६७० की ओर आकृष्ट किया जाता है कि वे इस एक्ट को पढ़कर ही ऐसे कालेजों में प्रवेश लें. अतः ऐसी संस्थाओं से आम जनता को सावधान रहने की सलाह दी जाती है.

कितने आश्चर्य की बात है कि आजकल विज्ञापन के जरिए लोगों को खुलकर धोखा दिया जा रहा है. संबंधित विभाग भी इन विज्ञापनों को नियमित रुप से पढ़ता है लेकिन फिर भी इस संबंध में कोई कार्यवाही नहीं हो रही.

ऐसे डॉक्टरों की संख्या भी बढ़ती जा रही है जो अपने नाम के पीछे एम. आर.एस.एच.(लंदन या यूके) लिखने लगे है. ताकि मरीज इस भुलावें में आ जाए कि डाक्टर विदेश से पढ़कर आया है. जबकि वास्तविकता यह है कि कोई भी व्यक्ति १००रु० खर्च करके लन्दन से रायल सोसायटी ऑफ हेल्थ का सदस्य बन सकता है चाहे वह डॉक्टरी जानता भी न हो. और अपने नाम के पीछे एम.आर.एस.एच. (लंदन) लिखने लगता है. इस प्रलोभन से तो अच्छे अच्छे योग्यता प्राप्त डाक्टर भी नहीं बचे है वे भी अपने नाम के बाद ए.आर.एस.एच. या एफ.आर. एस.एच.(लंदन) लिखने में गौरव का अनुभव करते हैं.

कुछ नीम हकीमों से जब आर.एम.पी. का अर्थ पूछा गया तो उन्होंने इसका अर्थ-रुरल मेडिकल प्रेक्टिशनर, रेगुलर मेडिकल प्रेक्टिशनर, रजिस्टर्ड मैग्नेट फिजिशियन बताया और उनके पास ऐसे ही प्रमाण पत्र भी थे. जो बोगस संस्थानों ने बेचे थे. और चतुर डाक्टरों से जब बी.ए.एम.एस या बी.आईएम. एस. या एम.डी का अर्थ पूछा गया क्योंकि उन्होंने अपने नाम के बाद उक्त डिग्रियां लिख रक्खी थी का अर्थ क्रमशः-

१. ब्रादर आफ एडवायजरी मेडिकल सोसायटी

२. बैचुलरइन मैग्नेटिक सांइस

३. डिप्लोमा इन मेग्नेट थैरेपी बताया.

अब यदि कोई अपने आपको या अपने नाम के बाद एम.बी.बी.एस. लिखकर इसका अर्थ मियां बीबी बच्चे सहित बतलाएं तो क्या यह क्षमा योग्य समझा जायेगा.

कहने का तात्पर्य यह है कि जब कोई भी व्यक्ति अपने नाम के पीछे ऐसी उपाधियां लिख सकता है तो असली और नकली में क्या अन्तर रह जाता है.यह तो कानून की अवहेलना के साथ-साथ जनता के साथ अन्याय भी है.

समाधान-प्रत्येक डॉक्टर के लिए अपने क्लीनिक या दवाखाने में अपने डिग्री जो उसने बोर्ड पर लिख रखी है और रजिस्ट्रेशन के प्रमाणपत्र का प्रदर्शन अनिवार्य कर दिया जाए.

सम्बधिंत विभाग समय समय पर इसकी जांच पड़ताल करता रहे. अनुभव के आधार पर रजिस्ट्रेशन बन्द है.

## लेखन प्रतियोगिता नं०२

इस प्रतियोगिता में रचनाकार को दिये गये शब्द पर एक कविता लिखकर भेजनी होगी. प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार पाने वाले रचनाकारों की रचनाओं को प्रकाशित किया जाएगा. यह प्रतियोगिता १२ वर्ष से ३५ वर्ष तक के उम्र के साहित्यकारों के लिए ही होगी. प्रथम पुरस्कार विश्व स्नेह समाज की त्रैवार्षिक, द्वितीय पुरस्कार वाले को द्विवार्षिक व तृतीय पुरस्कार पाने वाले को वार्षिक सदस्यता प्रदान की जाएगी. साथ ही प्रमाण पत्र भी दिया जाएगा.

**नियम एवं शर्तेः १.** एक शब्द पर एक रचनाकार की एक ही रचना स्वीकार की जाएगी. **२.**रचनाकार को अपनी रचना कें साथ मोलिकता प्रमाणित करनी होगी. **३.**रचना संबंधित विवाद पर रचानाकार स्वयं जिम्मेदार होगा. **४.** निर्णायक मंडल का निर्णय अंतिम एवं सर्वमान्य होगा.५. किसी भी प्रकार के विवाद के संदर्भ मे न्यायालीय क्षेत्र इलाहाबाद होगा. ७. रचना के साथ जबाबी टिकट लगा लिफाफा लगाना न भूलें. ८. प्रविष्टि के साथ कूपन होना अनिवार्य हैं. कूपन की फोटो स्टेट प्रति स्वीकार्य नहीं होगी.

***शब्दः नेताजी***

लिखें-संपादक, विश्व स्नेह समाज,
ईनामी प्रतियोगिता न०१, एल.आई.जी.-६३, नीम सरॉ कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

साहित्य समाचार

# अंग्रेजी से नहीं, अंग्रेजियत से विरोध है

✍ **विकास मिश्र,** गाजियाबाद

गाजियाबाद, आठवें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में देश के विभिन्न भागों से आये विद्वानों ने हिन्दी की वर्तमान स्थिति तथा सभी क्षेत्रों में इसके विकास पर अपने सारगर्भित विचार व आलेख प्रस्तुत किये.

अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा विकास संगठन एवं यू.एस.एम. पत्रिका के संयुक्त तत्वावधान में स्थानीय अग्रसेन भवन में आयोजित एक दिवसीय सम्मेलन के मुख्य अतिथि पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि ने कहा कि हिन्दी आज देश की सर्वमान्य राष्ट्रभाषा बनने के सर्वथा उपयुक्त है लेकिन इसमें सबसे बड़ी बाधा हिन्दी के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं. विशेषकर समाचार पत्रों में जिस प्रकार अंग्रेजी में शीर्षक दिये जाते है वह गुलाम तथा बाजारवाद से त्रस्त मानसिकता का ही परिचायक है. उन्होंने कहा कि अंग्रेजी से हमारा विरोध नहीं है, विरोध केवल अंग्रेजी मानसिकता से है. भाषा संस्कृति का अंग होती है, संस्कारों से जुड़ी होती है. हिन्दी जो संस्कार देती है वह अंग्रेजी नहीं दे सकती.

विशिष्ट अतिथि, हिन्दी अकादमी, दिल्ली के पूर्व सचिव, डॉ. रामशरण गौड़ ने कहा कि देश स्वतंत्रता के बाद नकलची पैदा करता जा रहा है. अंग्रेजी की पीठ पर चढ़कर जो अंग्रेजियत आ रही है वह खतरनाक है. गांव व कस्बों में अंग्रेजी माध्यम के अधकचरे स्कूलों के माध्यम से आज खेत खलिहानों तक अंग्रेजी पहुंच गई है, भले वहां इनका पर्याप्त ज्ञान न हो किंतु इसे अपनाने में झूठी शान समझी जाने लगी है. डॉ. गौड़ ने कहा कि हिन्दी सूर, कबीर, तुलसी, मीरा व विद्यापति आदि अनेकानेक महान संतो व साहित्यकारों की अमूल्य धरोहर है प्रख्यात साहित्यकार डॉ. वीरेन्द्र शर्मा ने कहा-हिंदी आज विश्व के अधिकांश देशो तक पहुंच चुकी है. वहां इस भाषा में विपुल साहित्य रचा जा रहा है तथा शोध कार्य हो रहा है. हमें अपने घर को संवारने की आवश्यकता है जिसके लिए चार सूत्रों को अपनाना होगा-संकल्प, साहस, समर्थन और संगठन.

वरिष्ठ कथाशिल्पी डॉ० कौशलेन्द्र पाण्डेय ने कहा कि हिन्दी के छात्र ही नहीं प्राध्यापक भी हीनभावना से ग्रस्त हैं. जबकि अपनी भाषा के प्रति गौरव अनुभव करना चाहिए. इसके अलावा डॉ. शंकर सिंह, दिल्ली, डॉ. राजेन्द्र गुप्त, मुंबई, ब्रजेश यादव, करनाल, बी.एल. जैन, राजस्थान, बी.आर.सुरेश, कोयम्बटूर सहित अनेक विद्वानों ने राजभाषा के क्षेत्र में सार्वजनिक संस्थानों में हो रहे कार्यो का ब्यौरा प्रस्तुत किया.

सम्मेलन के दूसरे सत्र में बाल कलाकारों द्वारा गायन, वादन व सामूहिक नृत्य की प्रस्तुति की गयी. इसके उपरांत काव्य गोष्ठी में सर्वश्री बाबा कानपुरी, कमल कपूर, इन्दु गुप्ता, त्रिपाठी कैलाश आजाद, केवल कृष्ण पाठक, एन.एल. गोसाई, प्रदीप गर्ग, अजय शर्मा, अजय 'अक्स', डॉ. पंकज परिमल, डॉ. भरत मिश्र प्राची, मजबूर गाजियाबादी सहित श्री सतीश सागर व कैप्टन ब्रहमानंद तिवारी ने काव्य पाठ प्रस्तुत किया.

इसके उपरांत प्रारंभ हुए सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि शिक्षाविद् साहित्यकार व पूर्व सांसद, डॉ० रत्नाकर पाण्डेय ने कहा कि जब हम हिन्दी की बात करते हैं तो वह समस्त भारतीय भाषाओं की बात होती है. क्योंकि सभी भाषाओं के साथ सामजंस्य स्थापित करके ही हिन्दी को राष्ट्रभाषा और विश्व भाषा बनाया जा सकता है.

इस अवसर पर मुख्यअतिथि डॉ. रत्नाकर पाण्डेय ने एन.एच.पी.सी. बनीखेत के कार्यपालक निदेशक नैन सिंह को राजभाषा रत्न, पावर फाइनेंस कारपोरेशन के महाप्रबंधक श्री विनोद बिहारी को राजभाषा शिरोमणि, कोचिन पोर्ट ट्रस्ट के अध्यक्ष को अतिविशिष्ट राजभाषा प्रेरक सम्मान, श्री वी.आर. सुरेश, कोयम्बटूर तथा डॉ. राजेन्द्र कुमार गुप्त, मुंबई को राजभाषा प्रेरक सम्मान सहित एन.एच.डी.सी., भोपाल को सर्वश्रेष्ठ संस्था का सम्मान प्रदान किया.

सम्मेलन में डॉ. कौशलेन्द्र पांडेय की नाटक कृति 'त्रिशंकु', कमल कपूर के काव्य संग्रह 'गुलमोहर हॅस उठे' तथा इन्दु गुप्ता के हाइकु संग्रह 'शबनम उदास है' डॉ० शंकर सिंह की पुस्तक सूचना प्रौद्योगिकी और इंटरनेट के लोकार्पण भी हुए.

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सम्मान नराकास करनाल के सचिव ब्रजेश यादव को दिया गया. राजभाषा गृह पत्रिकाओं में स्टील अथॉरिटी की 'इस्पात भाषा भारती' को प्रथम, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद की 'गगनाचंल' को द्वितीय तथा राजस्थान परमाणु संयंत्र की पत्रिका अणुशक्ति को तृतीय स्थान से सम्मानित किया गया.

इस एक दिवसीय सम्मेलन का संचालन मुख्य संयोजक व संपादक उमाशंकर मिश्र ने किया तथा सरंक्षक डॉ. आर. बी.एल. गोस्वामी ने आभार व्यक्त करते हुए मंचासीन अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेट किये.

# पर्यावरण की रक्षा के लिए युवकों को आगे आना चाहिए

गोकुल पब्लिक फाउन्डेशन सोसायटी, इलाहाबाद के तत्वावधान में राष्ट्रीय पर्यावरण जागरुकता अभियान २००६-०७ के तहत विषय वस्तु 'ठोस अपशिष्ट पदार्थो का प्रबंधन' विषयगत शोहरतगढ़ इन्वायरमेंटल सोसायटी के प्रायोजन में सैफियन्ट संस्थापन के सहयोग से पर्यावरण जागरुकता रैली का आयोजन किया गया. रैली लेट आर.पी. इंटर कॉलेज, चाका के प्रांगण से सी.ओ.डी. छिवकी के गेट तक निकाली गयी. रैली के समापन पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया. रैली का शुभारम्भ श्री डी.के. सिंह, वनक्षेत्राधिकारी, करछना, इलाहाबाद ने हरी झंडी दिखाकर किया.

रैली में सैकड़ों की संख्या में स्कूल के छात्र, अध्यापक/अध्यापिकाएं तथा समाजसेवी, लेखक, कवि व प्रेस रिर्पोटर शामिल थे.

रैली में बच्चों का हुजुम पर्यावरण बचाओ, देश बचाओ, हरे वृक्ष कर रहे गुहार, हमको रोपों बारम्बार, बच्चे हाथ में पालीथिन लेकर मेरा तुम मत करो प्रयोग, मैं हूँ एक भयंकर रोग आदि नारे लगाते हुए आगे बढ़ रहे थे. ये सभी नारें चार्ट पेपर के पोस्टरों पर भी लिखे गये थे. बच्चों के नारों के बीच कुछ कवि पर्यावरण पर अपनी कविताओं की कुछ पंक्तियां भी सुना रहे थे. रैली में बच्चों के नारों को सुनकर लोग अपने घरों से बाहर आ-आकर साथ चल रहे स्कूल के अध्यापकों व सामाजिक कार्यकर्ताओं से इसके बारे में जानकारी ले रहे थे. रास्तें से जो भी गुजर रहा था उसे सोसायटी द्वारा ठोस अपशिष्ट पदार्थो के प्रबंधन की जानकारी से परिपूर्ण पम्पलेट वितरित किया जा रहा था. रैली का असर इतना व्यापक रहा कि बच्चों को रैली के समापन के अवसर पर जब बिस्कूट का पैकेट दिया गया तो, बच्चो ने कहा 'सर अभी तो आप लोग पालीथिन का प्रयोग नहीं करने के नारे लगावा रहे थे और अब खुद ही पालिथिन के पैकेट का बिस्कूट दे रहे हैं. सोसायटी के कार्यकर्ताओं द्वारा तुरंत सभी बिस्कुट के पैकेट खोलकर उसमें प्रयोग पालीथिन कवर को जला दिया गया. बच्चें इससे बहुत खुश थे. और अपने घरो में इसका प्रयोग न करने की बात कर रहे थे. विद्यालय शिक्षक गण भी इससे प्रभावित दिखें.

रैली के समापन के बाद एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें मुख्यअतिथि वनक्षेत्राधिकारी, करछना, श्री डी.के.सचदेवा ने अपने सम्बोधन में कहा कि पर्यावरण के लिए युवकों को आगे आना चाहिए. हमारा जीवन पर्यावरण पर भी निर्भर है. हम सबका परमदायित्व बन जाता है कि प्रत्येक मनुष्य एक-एक पेड़ लगाकर इसे बच्चों की तरह देख भाल करें.

कार्यक्रम का संचालन करते हुए सोसायटी के प्रबंधक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने कहा कि हमें अपने दैनिक उपयोग में पालीथिन का प्रयोग बंद करना चाहिए. जहां तक संभव हो कागजी लिफाफें के प्रयोग को बढ़ावा देना चाहिए. पर्यावरण को बचाने के लिए हरे वृक्ष लगाने जरुरी है. अगर हम घर से झोला लेकर जाए तो पालिथिन में समान दुकानदार क्यों दे. अगर दुकानदार से पालिथिन के बदले कागज के लिफाफे में समान मांगे तो दुकानदार मजबुरी में ही सही कागज के लिफाफे को रखेगा. श्री द्विवेदी ने घर के कुड़े कचड़े के उचित प्रबंधन के बारे में भी जानकारी दी.

अध्यक्षता करते हुए सैफियन्ट संस्थान के संस्थापक हरकीरत सिंह ने कहा कि राष्ट्रीय पर्यावरण जागरुकता अभियान पूरे देश में चल रहा है. गुरुनानक देव ने भी पर्यावरण पर विशेष जोर दिया है.

रैली में पी.टी.आई के छायाकार पतविन्दर सिंह, भाजपा के युवा मंडल अध्यक्ष रंजीत सिंह, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान के संयुक्त सचिव व युवा कवि ईश्वर शरण शुक्ल, दैनिक जागरण के छायाकार दीपक, समाज सेवी रंजीत, राय, कवि अशोक कुमार गुप्ता, साहित्यांजलि प्रभा के संपादक एवं वरिष्ठ लेखक डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय, स्वर्ग सामाजिक संस्था के कोआर्डिनेटर अनिल सिंह, कवि अवधेश मौर्या, हिंदी मासिक विश्व स्नेह समाज की प्रबंध संपादिका श्रीमती जया शुक्ला, अंध विद्यालय, नैनी की संचालिका श्रीमती सोशन एलिजाबेथ, व समाज सेवी रेवा नन्दन द्विवेदी, कवि कु० गीता, सहित सैकड़ों की संख्या पत्रकार, समाज सेवी, कवि व जनसामान्य मौजूद थे.

सोसायटी के प्रबंधक श्री द्विवेदी ने विद्यालय प्रबंधन को कुछ गत्ते के कूड़ेदान भेंट किए ताकि बच्चें उसमें कूड़े रख सके और विद्यालय प्रबंधन को कूड़े को खाद्य में बदलने तथा उसका प्रयोग स्कूल में लगे गमलों में करने के बारे में बताया.

दूसरे चरण में गंधियांव, करछना, इलाहाबाद में कम्पोजिट बनाने की जानकारी देते हुए संस्था के सचिव गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने बताया कि ठोस अपशिष्ट पदार्थ तीन प्रकार के होते हैं-

**शेष पृष्ठ १७... पर**

# खुशहाल दाम्पत्य के लिए जरूरी है आपसी सांमजस्य

मार्केट में जरा बच्चों के लिए समान लेने गई थी कि पड़ोस में रहने वाला मोहित मिल गया, उसने मुझे बताया कि मम्मी की तबियत ठीक नहीं है, तो मैंने सोचा कि क्यों न जाकर प्रिया भाभी का हालचाल जाना जाये. लेकिन उससे भी पहले पास के ही टेलीफोन बूथ पर जाकर मैंने फोन पर उनका हाल चाल जानना उचित समझा. मेरे फोन करने पर उधर से प्रिय भाभी दबी सी आवाज में हैलो बोलीं तो मैंने अधिकारपूर्वक लगभग डपट कर ही कहा कि क्या बात है भाभी? आपकी तबियत कैसी है? तबियत खराब थी तो मुझे बता नहीं सकती थी.? लेकिन मेरे इन सब सवालों का जवाब दिए वगैर प्रिया भाभी का संक्षिप्त सा उत्तर मिला कि ठीक हूँ, अच्छा रिसीवर रख रही हूँ. बस यह कहकर उन्होंने रिसीवर रख दिया.

मेरे साथ ऐसा पहली बार हुआ था कि प्रिया भाभी ने बिना बातचीत किए ही फोन रख दिया हो. हम दोनों की तो फोन पर लम्बी-लम्बी बातें हुआ करती थी, पर आज उन्हें पता नहीं क्या हो गया. वैसे भी आज की इस घटना से मुझे बहुत आश्चर्य हुआ तथा मन बेचैन हो उठा. मुझे लगा कि प्रिया कहीं किसी बात पर नाराज तो नहीं है. यह सोचकर मेरा दिमाग इधर-उधर दौड़ने लगा फिर मेरे मन में आया कि हम दोनों के बीच कोई ऐसी-वैसी बात तो कभी हुई ही नहीं. फिर आखिर क्या बात हो सकती थी. बस ऐसे ही खयाल मन में आते-आते मैं घर पहुंच चुकी थी और मेरा हाथ

**कुछ देर बाद बस वह धीरे से बोली कि ठीक है, कुछ नहीं. प्रिया से मुझे अपने हर सवाल के कुछ ऐसे ही उत्तर मिलते रहे, जों मुझे बर्दाश्त नहीं हो रहे थे. मुझे लगा कि ऐसा कहीं कुछ जरूर था जिसे प्रिय कह नहीं पा रही थी. तभी अचानक उस समय पत्नी की बीमारी के कारण सुरेश भैया घर पर आ गए. मैंने बाहर निकलकर एकांत में उनसे पूछा कि भैया घर पर आ गए. मैंने बाहर निकलकर एकांत में उनसे पूछा कि क्या बात है भैया, प्रिया कुछ बोलती क्यों नहीं ?**

ताले-चाबी पर चला गया. अभी बच्चों के आने में काफी समय बाकी था. अतः ताला लगाकर मैं प्रिया के घर की ओर चल दी.

प्रिया हमारे घर के समीप ही रहती थी. जब मैं वहा पहुंची तो मैंने देखा कि प्रिय बिल्कुल शांत, गुमसुम व गंभीर बनी बैठी हुई है. मैने कई बार पूछा कि प्रिया कुछ तो बोलो, क्या तकलीफ है? क्या परेशानी है? मुझे कुछ तो बताओ. पर उसने कोई जवाब नहीं दिया. कुछ देर बाद बस वह धीरे से बोली कि ठीक है, कुछ नहीं. प्रिया से मुझे अपने हर सवाल के कुछ ऐसे ही उत्तर मिलते रहे, जो मुझे बर्दाश्त नहीं हो रहे थे. मुझे लगा कि ऐसा कहीं कुछ जरूर था जिसे प्रिया कह नहीं पा रही थी. तभी अचानक उस समय पत्नी की बीमारी के कारण सुरेश भैया घर पर आ गए. मैंने बाहर निकलकर एकांत में उनसे पूछा कि क्या बात है भैया, प्रिया कुछ बोलती क्यों नही? आप इन्हें डॉक्टर को क्यों नहीं दिखाते. इस पर सुरेश भैया बोले कि शायद प्रिया के मन में कोई बात है जो यह बर्दाश्त नहीं कर पा रही है. यदि वह अपने मन की बात किसी को कह दे तो शायद उसके मन का बोझ हल्का हो जाए. उन्होंने कहा कि ये सब मानसिक रोग के लक्षण हैं. तुम्हीं प्रिया को समझाओ जिससे हमारी गृहस्थी चौपट होने से बच सके.

फिर जब सुरेश भैया दवाई आदि देकर चले गए तो मैंने प्रिया को समझाया कि देखो तुम्हारी हाल को देखकर सुरेश भैया कितने बेचैन व परेशान हो रहे हैं. आखिर बताओ तो सही क्या बात है, क्यों अपने हठ के चलते सुरेश भैया को भी परेशान कर रही हो. बस इतना सुनते ही प्रिया बिफर पड़ी तथा उसकी आंखो के रास्तें आंसुओं की धारा फुट निकली. वह रोते-रोते मुझसे बोली कि उन्हें कोई परेशानी नही हैं, सब दिखावा है. न तो उन्हें मेरी परवाह है, न ही मेरे लिए उनके पास समय है. वह बोली कि मैंने हमेशा ही उपेक्षित व तनावपूर्ण जीवन पाया है. जब भी अपनी परेशानी उनको बताती हूँ, उनका मूड खराब हो जाता है. उनके पास तो मेरी बात सुनने का भी समय नहीं है. मैं किससे अपनी बात कहूं. उनसे कुछ भी कहो, बस एक ही उत्तर मिलता है कि

अपनी समस्याएं स्वयं हल किया करो. अब तो मुझे कुछ अच्छा हीं नहीं लगता है. सिर्फ अकेलापन ही मुझे पसंद आता है.

प्रिया का इतना कहना था कि मुझे एकदम से पुराने दिन याद आ गए. जब शुरू-शुरू में सुरेश भैया व प्रिया भाभी हमारे मोहल्ले में रहने आए थे. हमारे बच्चों की स्कूल की दोस्ती ने हम लोगों को भी आपस में काफी नजदीक ला दिया था. साथ ही बच्चों के बड़े होने के साथ-साथ हम लोगों की दोस्ती भी गहरी होती चली गई थी. सुरेश भैया आकर्षक व्यक्तित्व के धनी, हंसमुख व सहयोगी प्रवृत्ति के इंसान थे तथा एक प्रतिष्ठित कम्पनी में उच्च पर आसीन थे. अपने सभी मिलने वालों की समस्याओं के हल में सहयोग के लिए वह सदैव तत्पर रहते थे. सभी सुविधाओं से युक्त उनका घर सभी की मदद के लिए हमेशा ही खुला रहता था.

उधर प्रिया भाभी भी पढ़ी-लिखी, समझदार व आकर्षक महिला थी. वह परिवार में सुख-दुख में पूर्णतः समर्पित रहती थीं तथा ससुराल में भी सबकी प्रिय थी. दोनों पति-पत्नी को घर सजाने का बहुत शौक था और इसलिए वह दोनों मिलकर अपने घर को उत्कृष्ट बनाने में लगे रहते थे. परंतु सुरेश भैया अन्य लोगों के प्रति जितने सहयोगी थे, उतने ही अपनी पत्नी के प्रति लापरवाह भी थे. प्रिया ने सदैव ही अपने पति से उपेक्षित व तिरस्कृत जीवन पाया था. दोनों के बीच एक ही रिक्तता थी. उनके बीच एक ऐसा खाली स्थान पनप चुका था जिसकी भरपाई कैसे की जाए, यह दोनों की ही समझ से परे था. खासकर प्रिया का जीवन तो सोने के पिजरे में कैद चिड़िया के समान होकर रह गया था जिसके पास सुविधाएं तो सभी थी लेकिन प्यार भरी जिदंगी नहीं थी. अपनी पत्नी की इच्छाओं की पूर्ति की बजाए सुरेश भैया उनका इलाज कराना चाह रहे थे जोकि किसी डॉक्टर के पास नहीं अपितु उनके ही पास था. वह दोनों यह समझ नहीं पाए थे कि पति-पत्नी का रिश्ता अटूट और आपसी सहयोग के लिए अपेक्षित तथा एक-दूसरे की भावनाओं का आदर करने के लिए बना होता है. आज समाज में ऐसे भी पति-पत्नी होते है जोकि समाज में तो अपने चारों ओर प्रशंसात्मक दृष्टि के पात्र होते हैं लेकिन अपने वास्तविक जीवन में वह अपने गुणों को चरितार्थ नहीं कर पाते. स्वभाव, रूचि व व्यवहार में समानता होते हुए भी ऐसे पति-पत्नियों में आपसी सामंजस्य उत्पन्न नहीं होता है तथा बिना कारण ही एक-दूसरे के प्रति मन में ग्रंथियां बनी रहती है. इस प्रकार की समस्याओं से छुटकारें के लिए चाहिए कि बाहर की अपेक्षा अपने घर में अधिक प्रेम व सहायता प्रदान करें. घर को सजायें, संवारे तथा उसे पल्लवित होने के लिए आपस में प्रेम रूपी वर्षा करें.०

## जय हनुमान

**अखिलेश निगम 'अखिल'**, लखनऊ

जय-जन हनुमान, आप करूणानिधान,
ऋषि;मुनि, गुणीजन पार नहीं पाते हैं।
याचकों के रोग, शोक, भय को मिटाते सदा,
दानव दलों को एक पल में हराते हैं।
सुन भक्त की पुकार, करने को बेड़ा पार,
बिना देर किए आप दौड़े चले आते हैं।
ज्ञान गुण-सागर हैं, राम भक्ति गागर हैं,
हर घड़ी आठों याम राम-राम गाते हैं।।१।।

श्रुतियों में कुण्डल है, दिव्य मुखमण्डल है,
बाल रवि जैसा तन सौम्य शोभाशाली है।
शीश स्वर्ण का किरीट, कांधे मुंज उपवीत,
भाल पे तिलक चारू, छवि धुतिवाली है।
कर में गदा विशाल, मातु अन्जनी के लाल,
याचकों की टेर कभी जाती नहीं खाली है।
रोम -रोम बसे राम, राम-सीता, सीताराम,
प्यारे हनुमान जी की सुषमा निराली है।।२।।

जय-जय महावीर, हरिए सभी की पीर,
सब पर कृपा दृष्टि नित्य करा कीजिए।
दान करें रामभक्ति, बढ़े सदा अनुरक्ति
याचकों की याचना पे शीघ्र ही पसीजिए।
बल, बुद्धि, ज्ञान-खान, आप करूणानिधान,
भक्त हृदयों में आत्मबल भर दीजिए।
पूजा, ध्यान, वन्दना 'अखिल' जानता हूँ नहीं,
मुझ जैसे बालक को गोद बिठा लीजिए।।३।।


मासिक-
कत्युरी मानसरोवर
मुख्य संपादकः श्री बलवंत मनराल
नृसिंहवाड़ी, अलमोड़ा, उत्तराचंल

## कहानी

# खादी का कुर्ता

✍ नन्दलालराम भारती,
इंदौर,म.प्र.

**किसकी किस्मत में क्या लिखा हैं. किसको पता. बेटो को खूब पढ़ाने का कोशिश किये पर एक भी अपनी उम्मीद पर खरा नही उतरा. एक बीटिया थी वह अनपढ़ रह गयी. अगर वह पढ़ी लिखी होती तो जरूर अपनी उम्मीद पूरी कर देती. दमाद तो बढ़िया मिला पढ़ा लिखा पर वह भी किस्मत का मारा. शहर में धक्के खा रहा हैं. कोई काम धंधा नहीं मिल रहा है.**

इंस्पेक्टर साहब बाबू क्रान्ति लाल जी डयोढ़ी पर कदम ही नहीं रखें कि कौशल्या कौशल्या. अपनी पत्नी का नाम, पुकारने लगा.

कौशल्या-रसोई का काम छोड़कर भागी-भागी आयी और बोली क्यों जी घर में घुसे भी नहीं आवाज देना शुरू कर देते हो बोलो क्या हुआ.

इंस्पेक्टर साहब-कोई आया है क्या.

कौशल्या-इस तरह का प्रश्न इंस्पेक्टर साहब से सुनकर भैाचक्की रह गयी. इधर उधर देखकर बोली कोई और तो नहीं आप आये हो.

इंस्पेक्टर साहब-अरे मेरे अलावा और कोई तो नहीं आया ना.

कौशल्या-देखोजी अपनी जासूसीगीरी अपने दफ्तर में ही रखकर आया करो. यह घर है कोई दफ्तर नहीं. जब देखो तब जासूसगीरी करते रहते हो. अभी तक तो कोई नहीं आया. कोई आने वाला था. क्यों कोई मुजरिम जेल से भागा है क्यों जिससे सीधे हमारे घर आने का डर है.

इंस्पेक्टर साहब-नही कौशल्या. आजकल जेल से भागना आसान नहीं है. ऐसे ही मुजरिम जेल तोड़ कर भागते रहे तो फिर हमारे जैसे इंस्पेक्टरों का क्या काम. देखो मैं जासूसी तो नहीं कर रहा हूँ. मुझे लगा कि कोई आया है.

कौशल्या-कैसे लगा आपको कि कोई आया है.

इंस्पेक्टर साहब-चलो मान लिया कोई नहीं आया है. चलों ठीक है. छोड़ो सब एक गिलास पानी पीलाओं.

कौशल्या अरे दो मिनट चैन से बैठो तब ना चाय पानी दूं. आप तो घर में पैर नहीं रखे लगे जासूसी करने. अरे खाकी की वर्दी उतारों. इत्मीनान से बैठो. हाथ मुंह धोओ. थके मांदे आये हो. तब तो चाय पानी दूं. आप तो हो घर में घुसे नहीं जासूसी शुरू.

इंस्पेक्टर साहब-ठीक है भाग्यवान जैसा तुम कहो वही ठीक है. हमारी इंस्पेक्टर जनरल तो तुम ही हो.

कौशल्या-देखो जी बात को घुमाओ मत. मैं सब समझती हूँ. तुम्हारे साथ रहते तीस बरस तो हो ही गये है अब तक.

इंस्पेक्टर साहब-कौशल्या ठीक कह रही हो. वह दिन भी याद है, हमने कितने कष्ट उठाये साथ साथ. तुमने बहुत तपस्या की कौशल्या आज उसी का मीठा फल मिल रहा हैं. मैं इस्पेक्टर साहब बन गया. सच तुम्हारी तपस्या बेकार नहीं गई. तुम हमारी हिम्मत बढ़ती रही सब याद है. तीस साल पहले तुम दुबली पतली से छुईमुई सी थी. आज तो नाती पोते सब हो गये है. समय अपनी गति से भागा जा रहा है. तीस साल पहले के भी क्या दिन थे. हां सम्पन्नता अधिक नहीं थी पर तुम बहुत सम्पन्न थी.

कौशल्या-देखो मजाक ना करो. तुम अपनी मेहनत और लगन से इंस्पेक्टर साहब बने हो. तुम्हारे कर्मो का फल है कि आज तुम अपने मकसद में सफल हुए हो. मैं तो तुम्हारी परछायी मात्र हूँ. परिश्रम का फल तो मिलता ही हैं देर सबेर.

इंस्पेक्टर साहब-हां कौशल्या ठीक कह रही हो.

कौशल्या-किसकी किस्मत में क्या लिखा हैं. किसको पता. बेटो को खूब पढ़ाने का कोशिश किये पर एक भी अपनी उम्मीद पर खरा नही उतरा. एक बीटिया थी वह अनपढ़ रह गयी. अगर वह पढ़ी लिखी होती तो जरूर अपनी उम्मीद पूरी कर देती. दमाद तो बढ़िया मिला पढ़ा लिखा पर वह भी किस्मत का मारा. शहर में धक्के खा रहा हैं. कोई काम धंधा नहीं मिल रहा है. उसके तन के कपड़े तार-तार हो रहे है. कितना स्वाभिमानी दमाद हैं. कभी कुछ भी फरमाईश नहीं किया जबकि आज तो लड़के और उसके परिवार वाले खुलेआम मांग रख दे रहे हैं. हमारा दमाद हीरा है हीरा. ना जाने किस्मत क्यों धोखा दिये जा रही हैं.

इंस्पेक्टर साहब-मैं क्या करूं. किसके सामने हाथ फैलाने जाऊं. लोग क्या कहेंगे. अरे मेरे पाकेट में तो नौकरी है नहीं की निकाल और दे दूं.

कौशल्या-अरे ठीक हैं आपके पाकेट में नही हैं नौकरी. दो चार लोग तो जान पहचान वाले हैं कि नहीं. दमाद की हौशलाअफजाही तो कर सकते हो कि नहीं. मैं तो आपके मुंह से कभी नहीं सुनीकि आप ईश्वर बाबू की नौकरी धंधा के लिए बात किये हो. हरदम बस यही सोचते रहते हो कि बेटों की कब तरक्की दे दूं. अरे दामाद भी तो बेटा ही के बरोबर हैं. मैं तो नहीं कह रही हूं कि आप अपनी

कमाई अपनी जमीदारी में हिस्सा दो. जो व्यक्ति आपसे कभी सौ पच्चास की मांग नहीं किया लाख तकलीफ इसी शहर में उठाते हुए भी वह हक हिस्सा मांगेगा क्या कभी. नहीं बिल्कुल नहीं. अरे आपका भी तो कुछ फर्ज बनता है दमाद के प्रति की नहीं. कहा जाता है कि हीला रोजी बहाने मौत पर आपने दमाद के लिये कभी किसी से बात ही नहीं किये. नहीं दमाद को ही कोई रास्ता बताये कि बेटा ऐसे नहीं ऐसे करो. क्यों आप अपने फर्ज से मुंह मोड़ रहे हैं. अरे दामादजी के बाप तो खेतीबारी करने वाले व्यक्ति हैं उन्हें क्या मालूम. आप तो पढ़े लिखे साहेब, हो आप तो रायमशविरा तो दे ही सकते हो या जान पहचान के लोगों से नौकरी के लिए बात कर सकते हो पर नहीं दमाद के लिए बात करने में आपकी नांक नीची हो जायेगी यहीं ना.

इंस्पेक्टर साहेब- कौशल्या किससे बात करूं. कभी किसी से अपने लड़को के लिये बात नहीं किया तो दमाद के लिये बात करूं. लोग क्या समझेगे.

कौशल्या- अरे आप अपने कौन से बेटे को ऊंची डिग्री दिला दिये हो कि नौकरी के लिए औरों के पास सिफारिश करने जाओगे. दमाद के पास तो ऊंची डिग्री हैं. थोड़ी सी जान पहचान से काम हो सकता है. पर आप नहीं कुछ कर रहे हो. जबकि आप जानते हो कि बिना जान पहचान या घुस के नौकरी नहीं मिल रही है आजकल. अरे मैं तो नहीं कह रही हूँ कि दमाद की नौकरी के लिए हजार लाख घुस दों. अरे जान पहचान के बड़े लोगो से बात तो कर ही सकते हो. बात करना कोई अपराध तो नहीं हो जाता हैं. सभी अपनी औलाद के लिए करते हैं. ठीक हैं ईश्वर बाबू आपकी औलाद नहीं है दमाद तो हैं मनु अपनी औलाद तो है. अपनी बिटिया तो है. दमाद के सुख में उसका भी सुख निहित है. कभी इत्मीनान से सोचते. दमाद लायक है, पढ़ लिखा है. फैक्टरी में मजदूरी कर रहा है इससे आपकी इज्जत बढ़ रही है. दमाद की नौकरी के लिए किसी से बात करने में आपकी तौहीनी हो रही है क्या सोच है इंस्पेक्टर साहब आपकी. भगवान ही जानें.

इंस्पेक्टर साहेब- ठीक कह रही हो कौशल्या लोगो के सामने मैं नौकरी के लिए वह दमाद के लिए भीख मांगूगा तो लोग क्या कहेगे. ईश्वर पढ़ा लिखा है तुम्हारे कहे अनुसार काबिलियत है उसमें तो चिन्ता की बात नही है. नौकरी कभी ना कभी मिल ही जायेगी. मैं लोगों से नौकरी के लिए कहूंगा तो लोग क्या समझेगे मेरे विषय में. ईश्वर की किस्मत में नौकरी होगी तो मिल ही जायेगी. नहीं होगी तो बाप की तरह हलवाही करके गुजारा कर ही लेगा.

कौशल्या-कैसे बाप हो. अरे मनु के विषय में कभी सोचा है. बेटी के बाप लोग तो बीटिया के सुख के लिए मोटी मोटी रकम दहेज दे रहे हैं. आप हो कि नौकरी के लिए औरों से बात करने में अपमान महसूस कर रहे हो. अरे बेटी के बाप हो. जब अपनी इज्जत ही दे दी है तो फिर कैसा अपमान. वह भी बेटी दमाद को सुखी एवं खुश देखने के लिये.

इंस्पेक्टर साहेब- कौशल्या बीटिया की किस्मत में सुख होगा तो जरूर मिल जायेगा. हमारे करने से कुछ नहीं होगा.

कौशल्या- कौशल्या ठीक है. आप तो अपनी मर्जी के मालिक हो. भगवान को ही दमाद की फरियाद सुननी पड़ेगी किसी न किसी दिन.

इंस्पेक्टर साहेब-हां कौशल्या यही ठीक हैं. भगवान से दुआ करो. हमे चिन्ता करने की कोई जरूरत नही हैं.

कौशल्या- क्या कह रहे हो. किसे चिन्ता करने की जरूरत हैं. अरे हम भी तो ईश्वर के धर्म के मां बाप हैं. मां बाप को अपने बच्चे की चिन्ता नहीं होगी तो किसको होगी. ईश्वर बाबू कितनी मुश्किल में इस शहर में दिन काट रहे हैं. आपको खबर तक नहीं है. जबकि हर छोटा बड़ा काम आपका वही करते है फिर भी आपको अपने कर्तव्य का बोध नहीं हुआ आज तक. चार सौ रुपये की नौकरी कर रहे है वह भी मजदूर की तरह और उस नैाकरी का भी कोई भरोसा नहीं है. चार छः महीने के बाद मालिक दूसरा आदमी रख लेता है उन्हें निकाल देता है. यह तो हाल है प्राइवेट नौकरी की आप भी इस बात से अच्छी तरह परिचित है. इसके बाद भी आप कुछ नहीं कर रहे हो दमाद के लिए. दो छोटे-छोटे बच्चे हैं, बीटिया हैं. कैसे बितेगी. हम और आप बेटी दमाद की चिन्ता नहीं करेगें तो कौन करेगा. कितनी बड़ी चिन्ता की बात है परन्तु आपके लिए कोई बड़ी बात नही हैं.

इंस्पेक्टर साहेब-कौशल्या बीटिया का ब्याह गौना कर दिया वह अपने घर सुख भोगे. हमारा फर्ज बेटी के विदा होते ही पूरा हो गया. वह अपने भाग पर सुख भोगे. बेटे तो वंश चलायेगे उनकी चिन्ता न करूं तो किसी की करूं.

कौशल्या- अरे वाह बस इतना ही फर्ज रहता है बीटिया के प्रति बाप का. ठीक है बीटिया दमाद की किस्मत में जो होगा होकर ही रहेगा पर हमारा फर्ज भी उनके प्रति बनता है कि नहीं.

इंस्पेक्टर साहब- अरे वाह बस इतना ही फर्ज रहता है बीटिया के प्रति बाप

का. ठीक हैं बीटिया दमाद की किस्मत में जो होगा होकर ही रहेगा पर हमारा फर्ज भी उनके प्रति बनता है कि नही. इंस्पेक्टर साहब-कौशल्या देखो मै कोई विवाद तुम्हारे साथ नहीं चाहता करना. अरे अपने भाई साहब की मति भ्रष्ट थी ना जाने क्या देखकर ईश्वर को बीटिया के लिये वर के रूप में चुन आये. बार बार मना करने पर भी अपनी ही जिद पर अड़े रहे. आखिरकार भैयप्पन के लिए बीटिया का हाथ ईश्वर के हाथ में सौपना पड़ा वरना मैं कभी नहीं हलवाह पुत्र ईश्वर के साथ बीटिया का ब्याह करता. अरे ईश्वर ही जातिबिरादरी में एक योग्य वर था बीटिया के लिए क्या. लाखों लड़के पड़े थे अच्छे-अच्छे पर भइया अपने शरीर को तकलीफ नहीं दिये. एक नजर में ही ईश्वर को पक्का कर आये. अरे हमारी बीटिया के लिए पढ़े लिखे नौकरी धंधे वाले लड़को का अकाल थोड़े ही पड़ा था पर क्या करें अपनों के आगे झुकना पड़ा.

कौशल्या- देखो दमाद की बुराई ना करो. ऐसा दमाद तो आपको कभी नहीं मिल सकता हैं. हां गरीब है पर अच्छा तो है पढ़ा लिखा है सुशील हैं. आदर सत्कार करना जानता हैं. बीटिया को कोई तकलीफ नही पड़ने देता. मेरा दामाद लाखों में एक है. क्या अवगुण हैं. बस यही ना कि गरीब हैं. एक हलवाह का बेटा हैं. बाप मेहनत मजदूरी करते हैं. इसें अवगुण नहीं कहते इंस्पेक्टर साहेब.

इंस्पेक्टर साहेब-हां कौशल्या ईश्वर का घर परिवार हमारे योग्य नहीं है. इंस्पेक्टर साहब और कौशल्या का वादविवाद चल ही रहा था कि ईश्वर बाबू आ गये और बोले अम्मा सब सामान ला दिया हूं. देख लो. अब मैं अपने क्वाटर जा रहा हूँ.

कौशल्या-नहीं बेटा अभी नहीं जाओ. बैठों खाना बनाती हूँ खाकर जाना.

ईश्वर बाबू-नहीं अम्मा मुझे तैयारी करना हैं जाने की.

कौशल्या-कहां जाने की तैयारी कर रहे हो बेटा.

ईश्वर बाबू-अम्मा शहर से बाहर जा रहा हूँ हमेशा के लिये.

कौशल्या-क्यों और कहां जा रहे हो बेटा.

कौशल्या ईश्वर बाबू से बात कर ही रही थी कि बीच में ही इंस्पेक्टर साहेब बोल उठे-हमेशा के लिये.

ईश्वरबाबू-हां बाबूजी हमेशा के लिये. इस शहर के दिल में हमारे जैसे हलवाह पुत्र के लिये जगह नही हैं ना. मुझे तो ऐसा ही लगने लगा है. (कौशल्या की ओर ईशारा करते हुए ईश्वर बोला) अम्मा देर ना करो मेरा खादी का कुर्ता दे दों और जाने की इजाजत दो. मैं इस शहर और लोगों के परायेपन से हार चुका हूं.

कौशल्या-हां बेटा देती हूँ. पानी तो पी लो.

ईश्वर बाबू-प्यास तो अभी नहीं लगी हैं. अम्मा मुझे जाने की आप लोग इजाजत दो.

कौशल्या-(ईश्वर बाबू का खादी का कुर्ता देने को ले आयी और इंस्पेक्टर साहब को दिखाते हुए बोली)-इस खादी के कुर्ते को देखकर आप पूछ रहे थे ना कि कोई आया है क्या. अब तो पता चला किसका कुर्ता है. मालूम हैं दमादजी कुछ महीने पहले फुटपाथ पर से बीस रुपयें की पेंट, बीस रूपयें की शर्ट खरीदकर पहन रहे थे अब तक. वह भी फैक्टरी में काम करते हुए फट गया था. आर्थिक तंगी की वजह से सस्ता खादी का मजबूत कपड़ा लेकर कुर्ता सिलवाये हैं. इस शहर में बेचारा दमाद कितनी मुसीबते झेला हैं. अब तो शहर से बाहर ही जा रहा हैं. दमाद की याद इंस्पेक्टर साहेब आपको भी बहुत आयेगी क्योंकि आपका बहुत काम किया है दमाद ने मकान बनने से लेकर घर के काम तक. मेरे न रहने पर तुम्हारा कपड़ा भी दमाद ही धुल कर इस्त्री तक कर जाते थे. अब शहर से जा रहा है वही दमाद. याद तो आयेगी ना.

इंस्पेक्टर साहेब- ईश्वर बाबू के पास कपड़े नहीं थे तो मुझसे कहना था. अभी कल ही ना अपने कुछ पुराने कपड़े किसी दूसरे को दिये हैं. इन्हीं को दे देता.

ईश्वरबाबू-बाबूजी बहुत बहुत धन्यबाद. इस मेहरबानी के लिए कहते हुए अपने ससुर इंस्पेक्टर साहब का पैर छुआ अपनी सास कौशल्या का पैर छुआ और निकल पड़ा दूसरे शहर की ओर जहां वह अपने मकसद में कामयाब रहा. समय के साथ इंस्पेक्टर साहब भी बदल गये बेटो से कोई सुख नहीं मिला. हां लोगों के सामने दमाद के गुण गिनाते नहीं थकते थे.

## विदाई

चाहे हम व्यक्त न करें
अन्तर्मन के भावों को
दुःख की घड़ी में
सहसा निकल आते है
आंखो के रास्ते
अन्तस के आंगन से
उठते हुए
विरह वेदना के भाव
प्रकट हो जाते है।
पलकों की कोरों पर
कुछ दृग बिन्दु
और करा देते है
अहसास
अपनों से
बिछुड़ने का।

**श्याम सुन्दर सिखवाल**,नागौर, राजस्थान

# इलाहाबाद में ही पैदा हुए थे छत्रपति संभाजी के गुरु

फारसी लेखक खफी खां के अनुसार दूसरे मराठा छत्रपति सम्भ जी अपने शिक्षा गुरु और मंत्री कवि कलश सहित दुर्भाग्य से गिरफ्तार होकर जब औरंगजेब के सामने लाये गये, बादशाह तखत से उतरकर खुदा को धन्यबाद देने लगा. खफीखां लिखते हैं-'दोनों शिकंजे में जकड़े हुए थे. आंख और जुबान के सिवाय और किसी अंग का चलाना मुश्किल था. तो भी आंख और जुबान से सम्भा को संबोधन करके कवि कलश ने तुरत फुरत ही एक हिन्दी शहर (दोहा) इस तरह कहा कि हे राजन तुझे देखते ही आलमगीर बादशाह को, ऐसा तेज प्रताप वाला होकर भी, तखत पर बैठे रहने की ताकत नहीं रही और विवश होकर तेरी ताजीम के वास्ते तखत से उठ कर नीचे उतर गया.'

यह ओज भरी वाणी प्रयाग की माटी से उभरी थी. कवि कलश इसी सरस्वती की भूमि में जन्मा था. यहीं पर शिवाजी ने, पुत्र सम्भा का रक्षण भार उसे दिया जिसे कलश ने अंतिम क्षण तक निभाया. यह ऐतिहासिक तथ्य है कलश नामक कोई व्यक्ति संभाजी का सरंक्षक था. यही कवि कलश नाम से जाना जाता है. कवि कलश संभाजी का राजनीतिक गुरु और मंत्री भी रहा. कवि कलश विषयक प्रामाणीक जानकारी न के बराबर है. फिर भी खफीखां की फारसी तवारीख, भीमसेन लिखित 'तारीखे दिलकशा' और संस्कृत इतिहास ग्रन्थ अजितोदय में कवि के विषय में कुछ विवरण मिलता है. उस विवरण से पता चलता कि कवि कलश एक निर्भीक तथा विश्वसनीय व्यक्ति रहा. तभी तो शिवाजी ने दुर्दिन के समय पुत्र संभा की रक्षा का दायित्व उस पर छोड़ा. उसने पूरी सजगता से दायित्व को निर्वाहा और शिवाजी के राष्ट्रीय आदर्शो के अनुसार संभा जी के चरित्र का निर्माण किया. कवि कलश एक गुरू, एक सखा और एक परामर्श दाता के रूप में संभा के साथ जीवन के अंतिम क्षणों तक साथ रहा. कवि कलश भारतीय ओज और तेजस्विता का प्रतीक था. यही कारण है कि संभा के साथ बंदी रूप में उपस्थित होने पर भी उसने औरंगजेब को तिरस्कृत ही किया. अप्रकाशित संस्कृत महाकाव्य 'शम्भुराज चरित' और सुभाषित हारावली में कृष्ण पंडित का उल्लेख है. यही कृष्ण पंडित शम्भुराजनृपति का मंत्री रहा. शम्भुराज चरित संभा जी के जीवन पर आधारित महाकाव्य है. संस्कृत ग्रन्थों की सूचियों की सूची (कैटलागस कैट) में भाग ३ पृष्ठ २६६ पर कवि कलश और कृष्ण पंडित को एक ही व्यक्ति माना गया है. स्पष्ट है कि कवि कलश ब्राहमण कुल का विभूति था. जनपद अथवा प्रदेश के विषय में इतिहास मौन है. इस प्रश्न के समाधान का एक मात्र आधार है- शिवा द्वारा आगरा जेल से निकलने के बाद अपनाया जाने वाला मार्ग तथा विभिन्न पड़ाव. खफीखां ने अपनी तवारीख में जो विवरण दिया है-उसके अनुसार शिवाजी आगरा जेल से भागे तो पहले मथुरा पहुंचे. वहां दाढ़ी मूंछ कटाकर साधु वेश बनाया. वही वेश और साथियों ने अपना लिया. वह इलाहाबाद के रास्ते से बनारस गये. दुर्भाग्य से इलाहाबाद किले से कुछ दूर पर ही फौजदार मोहम्मद कुली ने पूरी की पूरी जमात को कैद कर लिया. एक दिन तक सभी कैद में रहे. दूसरे दिन शिवाजी ने मुक्ति का मार्ग निकाल लिया. उन्होंने दो और एक लाल देकर कैद से छुटकारा पा लिया. उसके बाद शिवाजी बनारस की ओर ही बढ़ें. संभा की अवस्था कम थी. पैदल चलने से उसके पैरो में छाले पड़ गये. उसके लिए आगे चलना कठिन हो गया. ऐसी स्थिति में शिवाजी ने सम्भा को कवि कलश के पास छोड़ दिया. यह कवि कलश उसके बाप दादाओं के पीढ़ियों से पुरोहित थे. उनके पास शिवा के पूर्वजों की मुहर और दस्तखत का 'लिखित' था. इस कारण विश्वस्त मानकर अपने बेटे को कुछ जवाहरात और अशर्फियों के साथ उसे सौंप दिया.

इस विवरण से स्पष्ट है कि शिवाजी ने संभा को इलाहाबाद में कवि कलश के पास छोड़ा. यह कवि कलश इलाहाबाद के किस कुल गौरव था? नगर के किस भाग में अथवा समीपस्थ किस गांव में वह जन्मा था, आदि प्रश्न विचारणीय अवश्य हैं किन्तु कवि कलश प्रयाग भूमि में तब था, जिस समय शिवा जी बनारस के मार्ग पर बढ़ रहे थे. शिवाजी मोहम्मद कुलीके कैद से छूटकर बहुत दूर न गये रहे होंगे, जब सम्भा की परेशानी का ज्ञान हुआ. किले से कुछ दूर पहले ही वह अपने साथियों के साथ कैद हो गये थे. वहां से आगे बढ़ने पर हो सकता है किले के पास तक आये रहे हों. इलाहाबाद के दारागंज मोहल्ले में रेलवे लाइन पुल के समीप संकट मोचन हनुमान जी का मंदिर है. इस मंदिर के प्रति जन सामान्य की बहुत आस्था है. जन समाज में विश्वास है कि इसमें हनुमान मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा समर्थ गुरु रामदास ने की थी. मंदिर के कुलागत पुजारी के अनुसार उनके पास गुरु राम दास द्वारा हस्ताक्षरित

लेख भी रहा है किंतु वह भीषण बाढ़ में नष्ट हो चुका है. इलाहाबाद में सबसे अधिक महाराष्ट्र समाज भी इसी मोहल्ले में है. भोसले बाड़ा और होल्कर जैसे विशाल भवन साक्षी हैं. सम्भवतः शिवाजी की भेंट कवि कलश से इसी भाग में हुई होगी. नगर का यह भाग बनारस जाने के मार्ग पर स्थित है. महाराष्ट्र समाज का सशक्त संगठन उस समय आज की अपेक्षा और अधिक रहा होगा. महाराष्ट्र समाज के कारण पुत्र संभा की रक्षा का विश्वास हुआ होगा. इसलिए शिवाजी ने पुत्र को यहां सुरक्षित किया. कवि कलश उस समय सम्भवतः इलाहाबाद नगर के इसी भाग में रहता रहा होगा.

कवि कलश प्रतिभा का धनी कवि था. वह संभा के साथ सदा रहा. कलश से ही प्रभावित हो स्वयं सम्भा हिन्दी में कविता लिखने लगा था. सम्भा के साथ कलश भी कैद किया गया और कुछ अन्य भी. औरंगजेब ने दोनों को सार्वजनिक रुप से अपमानित किया था. औरंगजेब (भाग ३, पृष्ठ ६३)के अनुसार बादशाह ने बड़े गुस्से और मुसलमानी मत के ताअस्सुब (धर्मांध होकर) से हुक्म दिया कि उस गुमराह को दो कोस से तखतेकुलाह (जकड़बंद) करके और उसके साथियों को मजहके (उपहास) के कपड़े पहिनाकर तरह-तरह से तकलीफ देते ऊंट पर सवार करके ढोल बजाते और बुरा कहते हुए उर्दू में लावें. सम्भा को तमाम उर्दू में घुमाते हुए दीवान आम में बादशाह के सामने लाया गया तो हुक्म हुआ कि कैदखाने में ले जायें. इसके साथ ही उसने तखत से उतरकर कालीन का कोना मांड़ा और जमीन पर सिर टेककर खुदा का शुक्र अदा किया. औरंगजेब को ऐसा करते देखकर कवि कलश ने सम्भा को संबोधित कर कहा था -तुम तप तेज निहार के. तखत तज्यों अवरंग. सम्भा ने भी उस औरंगजेब के प्रति तिरस्कार तथा घृणा भाव से अभद्र शब्द कहें था. परिणामतः दोनों की जीमें पहले कटवा ली गयी थीं. फिर आंखे निकलवायी गयी. अन्त में तलवार से बध किया गया था. इस तरह सम्भा के साथ कवि कलश देश, कुल के सम्मान में मिट गया.

## पर्यावरण की रक्षा पृष्ठ १० का शेष..

**१. जैव अपघटित पदार्थ**-ऐसे पदार्थो से है जिसका एक बार प्रयोग करने के बाद प्राकृतिक रुप से संशोधित कर दुबारा प्रयोग में लाया जा सकता है.

**२. हानिकारक व्यर्थ पदार्थ**-यह जैविक पदार्थ होते हैं यह पदार्थ स्वास्थ्य के लिए सबसे हानिकारक होते हैं.

**३. जैव अन अपघटित पदार्थ**-ऐसे व्यर्थ पदार्थ सम्मिलित है जिनका अपघटन हम प्राकृतिक रुप से नहीं कर सकते.

सोसायटी के सदस्य सदाशिव विश्वकर्मा ने बताया कि-ठोस अपशिष्ट पदार्थो को मुख्य रुप से चार भागों में बांट सकते है-

**१.नगरीय अपशिष्ट पदार्थ**- नगरिय अपशिष्ट पदार्थ के अन्तर्गत आवासीय, व्यापारिक, औद्योगिक कचरे शामिल है. इसमें हम अस्पताल से निकलने वाले कचरे को शामिल कर सकते हैं.

**२. औद्योगिक अपशिष्ट पदार्थ**-फैक्ट्रियों एवं कल कारखानों से निकलने वाले व्यर्थ पदार्थ भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हैं. इसमें खनन प्रक्रिया द्वारा उत्पन्न पदार्थ, निष्क्रिय पदार्थ, सामान्य पदार्थ तथा परमाणु कारखानों से निकलने वाले हानिकारक पदार्थ भी सम्मिलित होते हैं.

**३. कृषि अपशिष्ट पदार्थ**-हमारे खेतों में फसलों के पश्चात बचे हुए डंठल, पत्तियों, घास फूस, बीज आदि को हम कृषि अपशिष्ट पदार्थ कहते हैं. यही अवशेष मिट्टी में मिलकर जैविक क्रियाओं को द्वारा अपने आप अपघटित हो जाते हैं. इन्हीं अपशिष्ट पदार्थो को ढेर, बरसात फसल उत्पादन बढ़ाने के लिए रासायनिक खादों, कीटनाशक दवाओं के प्रयोग से भूमि प्रदूषण फैलता है.

**४.अस्पतालों से निकलने वाला अपशिष्टः** अस्पतालों में मरीजों के स्वास्थ्य लाभ हेतु उपयोग की गई सुईया, रुई, सिरींज, पट्टी इत्यादि प्रयोग के पश्चात् अपशिष्ट पदार्थ का रुप धारण कर लेते हैं. औषधीय पदार्थ, रोगात्मक पदार्थ, मरीजों के कटे अंग, मल, मूत्र आदि भी अपशिष्ट पदार्थ कहलाते हैं.

अध विद्यालय नैनी, के संचालक श्री रेवा नन्दन द्विवेदी ने बताया कि हम कूड़े कचरे को प्रत्यवर्ती पुर्नक्रण करें तो हम उच्च्व कोटि की जैविक खाद बना सकते हैं. हमें जीवांश कचरे को अनुपयोगी नहीं समझना चाहिए. ये पौधों के लिए पोषण स्रोत है. कूड़े से बिजली भी बनाई जा सकती हैं. इस अवसर पर ग्राम प्रधान वी.पी. उपाध्याय, पवनेश, अशोक सिंह बेशरम, चिरकूट इलाहाबादी, रसिकेश तिवारी, ईश्वर शरण शुक्ल, पतविन्दर सिंह पी. टी.आई छायाकार, डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय, सदाशिव विश्वकर्मा, मो. तारिक जिया, गिरिराज दूबे, ज्ञानेन्द्र सिंह सहित सैकड़ों की संख्या में गॉव पुरुष व महिलायें उपस्थित थी. सोसायटी के प्रबधंक सभी उपस्थित ग्राम वासियों को कार्यक्रम में सरीक होने पर बधाई दी.

# बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी श्री अजामिल जी

साहित्य और कला की अनेक विधाओं में एक साथ सक्रिय अजामिल जी को किसी एक-दो पड़ाव तक सीमित नहीं किया जा सकता, बल्कि कविता, कहानी, हास्य, व्यंग्य, नाटक, रेखाचित्र, छायाचित्र, पत्रकारिता, अध्यापन फिल्म आदि हर विधा में उनकी छाप स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है. बहुमुखी प्रतिभा के धनी अजामिलजी केवल नाटक के क्षेत्र में ही अभिनेता, निर्देशक और लेखक के रूप में जाने जाते है. १२ अगस्त १९४८ को डॉ० वसंत नारायण व्यास, के घर जन्में आर्यरत्न व्यास जिन्हें अजामिल के नाम से ही जाना जाता है. अपने अध्ययन काल में ही १९७२ में राजेन्द्र शर्मा के निर्देशन में मोहन राकेश के नाटक 'प्यालियां टूटती है' में अभिनय किया. मृदुल स्वभाव के धनी, कड़वा सच बोलने वाले श्री अजामिल जी की रचनाएं सारिका, धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, फिल्म फेयर, फेमिना, नवभारत टाइम्स, राजस्थान पत्रिका, पंजाब केसरी, ट्रिब्यून, जनसत्ता, इण्डिया टूडे, दिनमान, आजकल, उत्तर प्रदेश, आज दैनिक, अमर उजाला, समकालीन राजनीति, हिन्दुस्तान दैनिक, पराग, नन्दन, कादम्बिनी, नवनीत, राष्ट्रीय सहारा, नया प्रतीक, कला प्रयोजन, पहल, साक्षात्कार, वार्गथ, लोकमत, भारतीय रेल, सुदरंम, रविवार, खेल-खिलाड़ी, मेला, माया, मनोरमा, संडे मेल, अन्तर्राष्ट्रीय श्रोता समाचार, इन्टरनेट इण्डिया, आकल्प, मनोहर कहानियां, मध्य प्रदेश संदेश, सबरंग, यूनाइटेड भारत, सहित देश की लगभग सभी चर्चित पत्र-पत्रिकाओं प्रकाशित हो चुकी है तथा इण्डिया टूडे, अमर उजाला, जनसत्ता, सबरंग, नवभारत टाइम्स, साक्षात्कार, पहल, लोकमत, उत्तर प्रदेश, वर्तमान साहित्य, कथ्यरूप, कंक, दश्कारम्भ, समकालीन राजनीति, माया, अन्तर्राष्ट्रीय श्रोता समाचार, कला, प्रयोजन, आदि में रेखाचित्रों का प्रकाशन हुआ है तथा कुछ पत्र-पत्रिकाओं में छायांकन भी किया है.

कार्यक्रमों के संचालन में पांडित्य महारत श्री अजामिल जी की काला इतिहास, शिविर, आठवें दशक की सर्वश्रेष्ठ कविताएं जो कुछ हाशिए पर लिखा है-काव्य संकलन प्रकाशित, त्रयी-१ कवितावृत पहला काव्य संकलन डॉ० जगदीश गुप्त के सम्पादन में प्रकाशित और घंटी यों बंधी, एक और एकलव्य, बिल्लोरानी आदि बाल कहानी कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके है.

अपने लोगों को सही सलाह देना, उचित मार्गदर्शन करने में सुविख्यात श्री अजामिल जी ने इविन क्रिश्चियन कालेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय और भारतीय विद्याभवन पत्रकारिता संस्थान में अध्यापन कार्य भी किया है तथा अखिल भारतीय स्तर के अनेक साहित्यिक कार्यक्रमों, कवि-सम्मेलनों एवं विचार-गोष्ठियों का आयोजन, संचालन किया है. आपने मेंड़ के बाहर से-फ़जल ताबिश, अबु हसन-बादल सरकार, एक था गधा उर्फ अलादाद खां-शरद जोशी, पगला घोड़ा, इन्द्रजीत-बादल सरकार, ताम्रपत्र-देवाशीष, कमला-विजय तेन्दुलकर, तीसरा हाथी-रमेश बक्षी, किसी एक फूल का नाम लो-मधुराय, एक और द्रोणाचार्य-डॉ. शंकर शेष, इंस्पेक्टर मातादीन चांद पर-हरिशंकर परसाई, अंधो का हाथी-शरद जोशी, मेरे बच्चे-आर्थर मिलर, अमरू का कुर्ता-शरद बिल्लौरे, हानूश-भीष्म साहनी, उध्वस्त धर्मशाला-गोविन्द देश पाण्डेय, आदमी जो मछुआरा नहीं था-मृणाल पाण्डेय आदि महत्वपूर्ण नाटकों में प्रमुख भूमिकाएं अभिनीत की तथा मेरे बच्चे-आर्थर मिलर, हानुश-भीष्म साहनी, श्री निवारण भट्टाचार्य-अरूण शर्मा, भारतेन्दु चरित-अजित पुष्कल (श्रुति नाट्य प्रस्तुति), शायद यही सच है-अजामिल में निर्देशन किया है.

ध्वनि एवं प्रकाश के माध्यम से रामलीला-कथा रामराज्य की एवं अमृत वर्षा रामनाम की-का लेखन, निर्देशन एवं प्रस्तुत. यह नाट्य-प्रस्तुति दस दिनों तक प्रतिदिन लगभग बीस हजार लोगों ने देखी व सराही.

आपके रेडियों नाटक छोटूराम, मोटूराम, सरकस का टिकट, बरगद की गवाही तथा पगला घोड़ा, हानूश, श्री निवारण, विडियों नाटक चर्चित रहें.

आपका वर्तमान में ५०२/१६६ए/३, मीरापुर, इलाहाबाद में निवास करते है.

++++++++++++++++++++

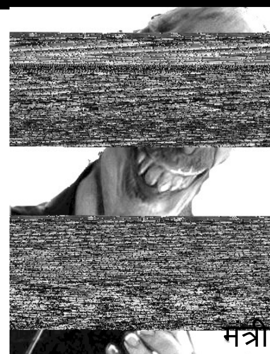

# नरक में नेताजी

✍श्रीकांत व्यास, पटना, बिहार

मंत्री पद जन्नत होता है. टेबुल पर पसरा कवर पेरिस और लंदन की यादें ताजा कर देता. कमरे का गलीचा देखकर अफसर भी आहें भरते. दीवाल पर टँगे गाँधी अपनी सादगी पर आठ–आठ आँसू रोते. अब तो निगोड़ा सूखा मरुभूमि नजर आता है.

जो समय बीत जाता है उसे हम भूतकाल कहते हैं और जो व्यक्ति अपनी मंत्रीपद से हट जाता है या हटा दिया जाता है उसे हम भूतपूर्व मंत्री कहते हैं. अकाल मृत्यु के बाद आदमी भूत बनता है. भूतकाल आदमी के हाथों में पश्चाताप के अवशेष छोड़ जाता है. कोई आदमी भूत से संतुष्ट नहीं हो पाया है. भूत की भरपाई मनुष्य सपना देखकर पूरा करता है. कहा भी गया है कि सपना अपनी नहीं होता, सो कभी किसी सपना पूरा नहीं होता. सिकन्दर महान का भी विश्व विजयी बनने का सपना पूरा नहीं हुआ तो आप किस खेत की मूली है.

भूत से जैसे आदमी दूरी बनाये रखना चाहता है ठीक वैसे ही भूतपूर्व मंत्री के पास जाने से लोग समय की बर्बादी समझते है. भूत के पास लोग भय से नहीं जाना चाहते है जबकि भूतपूर्व मंत्री के पास लोग अपने स्वार्थ सधते नहीं देख जाने से कतराते है. इसीलिए तो गोस्वमी तुलसीदास ने लिखा है–

सुर नर मुनि सब कै यह रीति।
स्वारथ लागि करहिं सब प्रीती।।

मेरे पड़ोस के एक भूतपूर्व मंत्री है सुखंदरलालजी जो अपने अतीत को यादकर सपने में मुस्कराते हैं. दूसरे एक ईमानदार मंत्री ऐसे है जो अपनी किस्मत पर आठ–आठ आँसू बहा रहे है. वर्तमान काल में सुखंदरलाल की दशा देखकर आप हैरान हो जायेगे. मंत्री जब अब सड़क से गुजरते हैं तो अपने लोग भी उससे कन्नी काट लेते हैं. कन्नी काटने वालों में कुछ वैसे भी लोग हैं जिनको उन्होंने अपने मंत्रित्व काल में लॉली पॉप दिखाया था. हालांकि बहुतों को मालोमाल भी करवाया. एक समय था जब जब मंत्रीजी का बंगला पैरवीकारों, चाटुकारों, घूसखोरों और चमचों से खचाखच भरा रहता था. तब हिरणियाँ भी घास डालती थी. कपड़ों प छिड़के इत्र से क्या गली, क्या कार्यालय सुगंधित हो जाता था. युवा लड़के भी खुशबू का लुफ्त उठाने से नहीं चुकते थे. तितलियां मंडराती रहती थी. तब मंत्री पद जन्नत होता था. टेबुल पर पसरा कवर पेरिस, लंदन की यादें ताजा कर देता. कमरे में बिछा गलीचा देखकर अफसर भी आहें भरते. दीवाल पर टँगे गाँधी अपनी सादगी पर आठ-आठ आँसू रोते. अब तो निगोड़ा सूखा मरुभूमि नजर आता है. पैरवी पैगाम की अलग भीड़. तसल्ली करने के लिए पी.ए. बहाल थे. बिना अच्छी आमदनी के नास्ता भी हजम नहीं होता था. लोग पाँव छूकर आशीर्वाद लेते सो अलग. घरवाली बुढ़िया भी तितली की तरह सजी रहती थी. एक तरफ मिलने वालों की लम्बी कतार जमी रहती थी तो दूसरी तरफ साहब का अधिकांश समय व्यायाम या बाथरुम में गुजरता. हाँ कारवालों के लिए पिछला दरवाजा हमेशा खुला रहता. अपने समर्थकों के लिए तो धरती पर स्वर्ग उतार लाने का भी वादा करने से नहीं चूकते नेताजी. 'हरि अनंत हरिकथा अनंता' की तरह पूर्व मंत्रीजी की कथा है. वैसे पढ़ने-लिखने में मन नहीं लगता था मंत्रीजी को. मगर भाषण करते वक्त विद्वानों को भी मात कर देते थे. लोग उनके सुनहरे सपनों से भरे भाषण सुनकर खूब तालियाँ पीटते. कभी-कभी तो ताली बजाने वालों की जमात भी साथ लेकर चलते मंत्रीजी.

एक जमाना था जब मंत्री जी विभिन्न उद्घाटनों, सेमिनारों, परिचर्चाओं आदि में व्यस्त रहा करते थे. अभी समय ही समय है. पूर्व मंत्री जो ठहरे. तब बर्थ–डे पार्टियों में घर सामान से पट जाता था. आमद जमा करने के लिए तिजोरियां भी छोटी पड़ जाती थी.

मंत्रीजी बड़े धार्मिक हैं. अयोध्या के एक तथाकथित तोतानुमा संत के परम शिष्यों में से एक हैं मंत्रीजी. दिखाने को तो मंत्रीजी जनता के सामने शुद्ध वैष्णव है.मगर छिपकर होटलों में मुर्गे की टाँग तोड़ने से बाज नहीं आते. सुबह पूजा घर में घुसते हैं तो घंटो लगा देते हैं. पता नहीं कैसी पूजा करते हैं. बेचारी पत्नी इन्हें साधू सज्जन समझती. यह दूसरी बात है कि रात में जरुरी मीटिंग का बहाना बनाकर रम्भा-मेनका के संग गुलछर्रे उड़ाते.

मंत्रीजी के ललाट पर त्रिपुण्ड क्या

खिलता है. उनके मुखमण्डल की शोभा में मुँह से बाहर निकली बत्तीसी थोड़ी बाधा अवश्य डालती है. मंत्रीजी के पतित होने की पुरजोर वकालत करती है बत्तीसी. उनकी निर्लज्जता की हद उस समय पार कर जाती है जब विरोधी पक्ष के वर्तमान मंत्री घोटाले में फँस जाते हैं. तब भूतपूर्व मंत्रीजी बड़े निर्मोही होकर अखबार में बयान जारी करते-“जनता की गाढ़ी कमाई को लुटने वाले वर्तमान मंत्री अपने पद से अविलंब इस्तीफा सौप दें. अगर ऐसा नही हुआ तो हम सैकड़ों दरिद्रनारायणों को साथ लेकर आमरण अनशन पर ऐसे बैठ जायेंगे जैसे फेविकोल के साथ कोई वस्तु चिपक जात है. हमारे आदमी भी तब चिपको आन्दोलन चलायेंगे. ”एक रात सुखंदरलाल ने गजब का सपना देखा. उन्होंने देखा कि मार्निंग वाक कर जब वे अपने घर लौट रहे थे तो अचानक एक पागल हाथी ने कुचलकर मार डाला. फौरन आत्मा को परलोक ले जाने के लिए एक यमदूत आ गया. चंदन तस्कर वीरप्पन की तरह कड़ी-कड़ी मूँछ पर हाथ फेरते हुए यमदूत ने कहा-“सुखंदरलाल, तुम्हें अब परलोक जाना होगा?”

“क्यों भाई?”

“क्योंकि तुम्हारा समय पृथ्वी पर पूरा हो चुका है.”

“पूरा हो चुका है.”

“हॉ, हॉ, पूरा हो चुका है.”

“भाई मुझे अभी और कई इलेक्शन लड़ना है?”

“बहुत इलेक्शन लड़ चुके. अब कितना इलेक्शन लड़ेगा?”

“सच कह रहा हूँ भाई, और लड़ना है.”

“तुम्हें किसी भी हालत में परलोक जाना होगा. यमराज का आदेश है कि चाहे जैसे हो नेता को लाना है. मैं तुमको ससम्मान यमराज के दरबार में हाजिर करना चाहता हूँ. भलाई इसी में है कि तुम यमराज के दरबार में हाजिर करना चाहता हूँ. भलाई इसी में है कि तुम तुरन्त चलो. मुझे आदेश का पालन करना है.”

नेताजी ने भी अपना रौब दिखाते हुए कहा-“क्यों बे. किसी विरोधी पार्टी के कहने पर यह कदम उठा रहा है क्या?”

“मैं केवल और केवल आदेश का पालन करने आया हूँ. तुम पर आरोप कि अपने समर्थकों के जरिये पहले दंगा करवाते हो, मंच पर आठ-आठ ऑसू बहाते फिर शान्ति जुलूस निकालवाते हो.”

“यमदूत यह तुमको कैसे मालुम हो गया?”

“अरे नेता, वहॉ तो तुम्हारे कारनामों का पूरा लेखा-जोखा मौजूद है.”

“मैं एक ही शर्त पर वहॉ जाऊंगा. पहले बताओ कि वहॉ मेरे लिए क्या-क्या सुविधॉए उपलब्ध रहेगी. शराब और सुरा मिलेंगे न.”

“यह तो यमराज बतायेंगे. तुम अब चलो.”

“मेरा प्राइवेट बॉडीगार्ड.”

“उसका समय अभी पूरा नहीं हुआ है. ”

“क्या मुझे वहॉ किसी निर्जन टापू पर रखा जायेगा? सुरा-सुन्दरी का दर्शन होगा या नहीं.”

“वह तो पहुँचने के बाद ही पता चलेगा. ”

“अरे, जेल में यहॉ सारी सुविधाएं मिल जाया करती है तो क्या परलोक में उस सुविधा से वंचित रखा जायेगा.”

“बात ज्यादा मत बनाओ. चलो अभी. बहानेबाजी तुम्हारी अब नहीं चलेगी.” यमदूत नेताजी की गर्दन पकड़कर सीधे आकाशमार्ग से होते हुए परलोक पहुँचा. नेताजी को यमराज के दरबार में हाजिर किया गया. नेताजी का पूरा लेखा-जोखा प्रस्तुत होने लगा. यमराज ने नेताजी से पहला प्रश्न किया-“पृथ्वी पर तुम्हारी सबसे बड़ी उपलब्धि क्या रही?”

“हमने जेल में ही रहकर अपने प्रतिद्वन्दी उम्मीदवार को तीन लाख तेरह हजार तीन सौ तिहत्तर वोट से पराजित किया. पृथ्वी पर मेरी सबसे बड़ी उपलब्धि यही रही.”

“यह भी कोई उपलब्धि है. तुमने जनता का दिल तो जीता नहीं. बूथ

## ग़ज़ल

हवाओं के रुख अब बदलने लगे हैं
पत्थर के दिल भी पिघलने लगे हैं।
तड़पा रहे थे कल तक जो अपने हमको
आज वो खुद ही तड़पने लगे हैं।
समझा था जिसने सफर है सुहाना
मंजिल पर आकर भटकने लगे हैं।
समझते रहे जो प्यार को खिलवाड़ एक
वही प्यार को अब तरसने लगे हैं।
तोड़ते रहे जो दिल हर किसी का
टूटा दिल अपना तो सिसकने लगे हैं।

**डॉ. इन्दिरा अग्रवाल**, अलीगढ़,उ.प्र.

## कश्मीर

आहटे गलियों में होती है,
ओर हम चोंकते है।
कुत्ते तो यहॉ,
सरे शाम से ही भोकते है।
दस्तकें होती है, दरवाजों पर,
और हम सिहर जाते है।
अनबुझी आशंकाओं से,
सपने विखर जाते हैं।
ये काश्मीर की धरती है,
स्याही का कोई काम नहीं।
यहां के अखबार तो अब,
खून से लिखे जाते है।

**जयसिंह अलवारी**, बल्लारी, कर्नाटक

कैप्चरिंग कर जीता है. बेचारी जनता तो तुमको गाली देती है.”
“झूठ, सरासर झूठ. आप जनतांत्रिक व्यवस्था पर कीचड़ उछाल रहे है. संविधान पर से लगता है आपका विश्वास उठ चूका है.”
“यह झूठ नहीं हकीकत है. तुम्हारा काला कारनामा खाता-बही में हू-ब-हू अंकित है.”
“जनता का काम है गाली देना. मेरा काम है जीतना. सो, मैं जीत कर आया हूॅ.”
“तो तुमको जनता विश्वास नहीं?”
“क्यों नहीं.”
“तुमने जनता के साथ विश्वासघात किया है. इसलिए तुमको नरक में भेजा जाएगा.”
“नरक में.”
“हॉ, हॉ, नरक में.”
“आप अपने पद का दुरुपयोग कर रहे हैं?”
“बकवास बन्द करो, तुम्हारे पाप का घड़ा भर चुका है. अब तुम्हें किये का फल मिलेगा. नरक की हवा खानी पड़ेगी.”
“अगर आप मुझे नरक भेजेंगे तो वहॉ भी जनता का दिल जीत कर दिखा दॅूगा.”
“वो कैसे?”
“अरे वहॉ भी तो मेरे ही जैसे आदमी होगें. मेरा विपक्षी वहॉ कौन हो सकता है. वहॉ भी मैं निर्दलीय उम्मीदवार के रुप में जीत कर साबित कर दूंगा कि मैं निर्दोष हूॅ. बहुमत मेरे पक्ष में है. सारी अनाचारी और दुराचारी जनता मेरे ही पक्ष में वोट डालेगी. तब नरक का राजा मैं बनूंगा. यमराज याद रखना, तेरा ताज एक न एक दिन मेरे सिर पर होगा.”
बेचारे यमराज भयभीत होकर अपना मुकुट संभालने लगे.

# प्यार पूजा ही तो है

✍डॉ० पूरन सिंह, नई दिल्ली

**मैं** पिछले पंद्रह दिनों से अपनी गर्लफ्रेंड उर्वशी से नहीं मिला था सो बहुत व्याकुल था. उसकी तबियत तो पहले से ठीक नहीं थी. उसे सर्दी लग गई थी. उसने ही फोन पर बताया था मुझे. आज अचानक ऋचा मिल गई, ऋचा और उर्वशी सहेलियां हैं. मुझे देखकर ऋचा कहने लगी, “अरे वैभव, तुम्हें पता है उर्वशी हॉस्पीटल में भर्ती हैं.”
“क्यो”
“उसकी तबियत बहुत खराब है. जानते ही उसकी मॉ ने उसे किसी झाड़फूंक करने वाले आदमी को दिखाया था जिसने उससे कहा था कि वह रोज-सुबह-शाम नहा-धोकर भैरो बाबा के सामने दीपक जलाए तो ठीक हो जाएगी. वह ठीक होने के बजाए और बीमार हो गई. तुम्हें पता नहीं वह तो सिर्फ दो एक दिन की मेहमान है.”
मेरी आंखो के सामने आसमान घूमने लगा था. अरे भगवान यह क्या हो गया उसे तो पहले से ही सर्दी थी और ऊपर से वह सुबह शाम नहाती होगी. अरे बाप रे अब नहीं बचेगी मेरी उर्वशी. मन में आ रहा था कि उस झाड़फूंक करने वाले को जान से मार डांलू और उन सभी को भी जिन्होंने ऐसा करने की सलाह दी. मैं तुरंत अस्पताल पहुंच गया था. मेरी उर्वशी अस्पताल के बेड पर पड़ी हुई थी. उसमें सिर्फ सांसे ही शेष थी जिसे देखकर मेरी सांसे चलती थी आज मुझे देखकर हिल भी नहीं पा रही थी.
“कैसी हो उर्वशी”
तभी डॉक्टर साहब आ गए थे.
“डॉक्टर साहब मेरी उर्वशी ठीक तो हो जाएगी,” मैंने गिड़गिड़ाते हुए पूछा था.
“भगवान से प्रार्थना करो.” डॉक्टर ने कहा था.
“क्यों करुं भगवान से प्रार्थना, की तो थी उर्वशी ने भगवान से प्रार्थना क्या किया उसने? रोज सुबह शाम प्रार्थना ही तो कर रही थी आप इलाज कीजिए डॉक्टर साहब पूरी लगन से.” डॉक्टर मेरी तरफ देखने लगा था उसे मुझ पर गुस्सा नहीं आया था. तभी मैं आगे फिर बोला था, “डॉक्टर साहब, बचा ले मेरी उर्वशी को मेरा सब कुछ ले लो. मेरी जान ले लो परन्तु उर्वशी को बचा लो. मैं आपके आगे प्रार्थना करता हूॅ, हाथ जोड़ता हूॅ. प्लीज..”
डॉक्टर ने मुझे उठाया और बड़े प्यार से पुचकारते हुए कहा था, “दोस्त जिसे तुम्हारे जैसा चाहने वाला मिला हो, जिसे तुम्हारे जैसा प्यार करने वाला मिला हो उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता, तुम्हारी उर्वशी जरुर ठीक होगी मेरा वादा है. मैं पूरी कोशिश करूंगा. आई विल ट्राई माई वेस्ट” और डॉक्टर साहब ने मुझे उर्वशीा की तरफ मोड़कर कहा था “देखो दोस्त! तुम्हारी उर्वशी ने आज तुम्हें देखकर पहली बार आंखे खोली है, लगता है तुम्हारे प्यार के आगे सारी पूजा व्यर्थ है. इतने दिनों से जो काम मेरी दवा नहीं कर सकी उसे तुम्हारी एक नजर ने कर दिया. मैं तुम्हारे प्यार के आगे सिर झुकाता हूॅ.”
और मैं, मैं तो अपनी उर्वशी की आंखो में जीवन ज्योति देखे ही चला जा रहा था.

# मानव धर्म व मानवता

✍ कालीचरण दीक्षित,
शाहजहॉपुर, उ.प्र.

मानव को मनु के वंशधर (वंशज) होने से मानव कहा गया है, "मनोरपत्यं पुमान मानवः" मनु से मनुज हुआ. अग्रेजों ने मैन शब्द बना लिया. मनु ज्ञाने धातु के अर्थ से मानव शब्द निष्पन्न हुआ अर्थात् ज्ञानपूर्वक काम करने वालो को मानव कहते है. तभी रामचरित मानस ग्रंथ रत्न में भगवान ने कहा-'सबसे अधिक मनुज मोंहि भाये.'

मनु, कश्यप ऋषि पत्नी कही गई हैं, आर्षग्रन्थ आदि महाकाव्य में आप्त पुरुष कश्यप की सन्तान मनुज है. भागवत पुराणोल्लेख है स्वायम्भुव मनु शतरूपा से मानव की उत्पत्ति हुई. स्वायम्भुव मनु शतरुपा के ही रुपान्तर कश्यप पत्नी मनु से मनुज हुए, मनु ही मनुस्मृति के आद्य प्रवर्तक कहे गये हैं. हरिवंश पुराण व्यासकृत परम आर्ष ग्रंथ १/६ दृष्टवव्य है पठनीय है, इन्हीं मनु के वंश में राजा इक्ष्वाकु हुये विवस्वान पुत्र होने से इन्हें वैवस्वतमनु कहा गया तभी तो महाकवि कालिदास ने रघुवंश में 'मनुवंशकेतुम' लिखा है.

मानवताः मानवता का अर्थ मनुष्यता है. मानव शब्द में 'ता' प्रत्यय जोड़ने से मानवता शब्द बना जिसका आशय है-'मानवोचित सद्गुणो को मानवता कहा गया है अर्थात् सदाचार, परोपकार, सेवा-दया आदि मानवोचित भावों को मानवता कहते हैं. भगवान विष्णु के अवतार मानवतां स्थापनार्थ जन कल्याणार्थ हुए हैं. भारतीय लोक मर्यादा के परमादर्श नरवरोत्तम श्री राम ने मानवीय आदर्श की स्थापना तथा मानवता को समुन्नता करने की प्रेरणा शिक्षा दी है. वह आदर्श राज्य के प्रणेता कहे गये हैं. शाश्वत धर्म स्कन्ध सद्गुणों के प्रकाशक सांस्कृतिक महापुरुष कहे गये हैं. उनका सदाचार शुभाचरण धारण करने योग्य आचरण है अनुसरणीय आदर्श वंदनीय है.

धर्मः धर्म का अर्थ है-धारण करने योग्य इसका आशय है कर्तव्यन्याय, सत्य कर्म शुभाचार धारण करने योग्य आचरण 'ध्रियते यः स धर्मः' धर्म उस क्रिया निष्ठा की पद्धति का नाम है जो सबको धारण करता है जैसे-अग्नि में उष्णत्व दाहकता धर्म है और यदि आग में दाहकता उष्णता न रहे तो अग्नि का अस्तित्व ही समाप्त माना जायेगा. इसी प्रकार मनुष्य में जब मानव धर्म सत्कर्म नहीं रहेगा तो वह पशुवत हो जायेगा अर्थात् मानव और मानवता धर्म का पालन करना मनुष्य का परम कर्तव्य है. भारतीय मानव, आर्षजन 'सर्वेभवन्तु सुखिनः' का सुभाव संजोये है. भारत सांस्कृतिक अध्यात्म प्रधान देश कहा गया है. सत्यानुसंधान तो यह है 'कली कली मै धरती के फूलों की खुशबू, ये तमाम फूल तो एक ही मॉ के जाये हैं.

याद रहे-काया ते जो पातक होई, विनु भोगे वचि है नहिं कोई।।

'अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्' महाभारत युद्धोपरान्त शरशयया पर पड़े नोकदार वाणों पर पड़े भीष्मपितामह ने योगेश्वर भगवान कृष्ण से पूछा-हमने न विगत पिछले जन्म में कोई पाप-अपराध किया और न इस जन्म में कोई पाप अपराध किया अनीति नहीं किया फिर हमें तीरो (वाणों) की नुकुली चुभने वाली शयया क्यों प्राप्त हुई? दिव्यावतारी श्रीकृष्ण ने कहा-हम तुम्हें दिव्य दृष्टि देते हैं अपने बहुत पिछले जन्म की घटना देखो बहुत जन्म पहले भी आप हाथी के महावत थे. पुरूष थे किन्तु उस पिछले जन्म में आप ने अंकुशनोक से एक गिरगिट को छेद दिया और अंकुश नोक से उस गिरगिट को कांटों पर नागफनी के कांटेदार वृक्ष पर फेंक दिया. कष्टदा कांटा छिदते रहे और उसकी मृत्यु हो गई. उस असद् कर्म का फल आप इस समय भोगते कांटेदार चुभन करने वाली शर शयया पर आप पड़े है. प्रारब्ध फल आपने भोग कर लिया अब शुभगति आपको मिलना है.

विषय के उपसंहार में सारांश में कहना है मानव को मानव धर्म का कर्तव्य का पालन करना चाहिए.नैतिक जीवन व्यतीत करने मानवता पालन करने उत्थान, कल्याण होता है.

## साहित्यकारों/सदस्यों के लिए

१.पत्रिका के लिए लेख अथवा प्रकाशन सामग्री कागज के एक ओर बायी तरफ पर्याप्त हाशिया छोड़कर स्पष्ट सुन्दर अक्षरों में लिखकर अथवा टाईप कराकर दो पंक्तियों के बीच में समुचित स्थान के साथ भेजें. किसी भी उद्धरण का पूरा सन्दर्भ अवश्य दें. रचना की वापसी के लिए टिकट लगा लिफाफा भेजना न भूलें. २. किसी पर्व/अवसर विशेष पर सामग्री दो माह पूर्व भेजें. ५. यदि आप अपनी कृति (काव्य, ग़ज़ल, कहानी, निबंध संग्रह, उपन्यास) का विज्ञापन इस पत्रिका में छपवाना चाहते हैं तो रु० १००/-का मनिआर्डर तथा एक प्रति पुस्तक की भेजें. ६. धनादेश 'संपादक, विश्व स्नेह समाज' के नाम से भेजें. चेक स्वीकार्य नहीं होगा. सदस्यों को चाहिए कि अपना डाक पता स्पष्ट सुन्दर अक्षरों में लिखें.

# एक स्टुपिड ट्री की कहानी

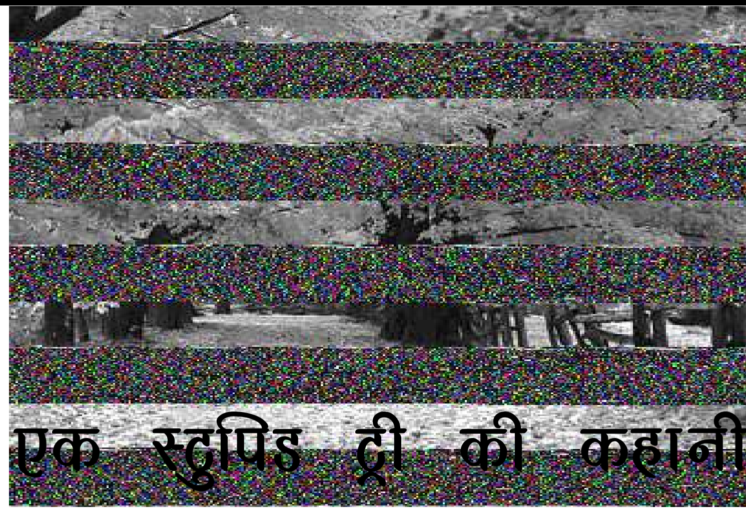

हृदयेश भारद्वाज, इंदौर

सुहैल भाई की पत्रिका के आवरण अक्सर धरती से जुड़े-प्रकृति के विहंगम दृश्य लिए होते हैं. सूखे ठूंठ में भी जान डाल देना सुहैल भाई की फोटोग्राफी का कमाल होता है. मैंने अनेक बार उनके साथ बीहड़ों, पर्वतीय क्षेत्रों की यात्राएं की है. कभी कार के बैकव्यू मिरर में उन्हें किसी पेड़ का तना खूबसूरत लगा और लगे कार को ब्रेक, फिर तो जाने कितने कोणों से उस पेड़ का फोटो ले डालेंगे. मेरे आफिस के बाहर एक कोने में एक अमल तास का बूढ़ा पेड़ है जिस पर शायद ही किसी की नजर पड़ती होगी. सुहैल भाई ने देखा और लेट गए पीठ के बल जमीन पर और फोटो ले डाली उस पेड़ की. जब वह फोटो पत्रिका के आवरण पर आया तो सबको यही लगा कि यह किसी घने जंगल में खड़ा पेड़ है जबकि ऑफिस की बिल्डिंग ने इसे तीन तरफ से घेर रखा है. मगर यह उनकी पीठ के बल लेटने का कमाल था कि फोटो में फूलों से लदा पेड़ और नीला आसमान भर दिख रहे थे. कंकरीट का जंगल गायब था. सुहैल भाई घुमक्कड़ तबीयत के आदमी है और गाहे बगाहे मुझे मिलने भी आ जाते हैं. पिछले महीने जब यहां आए हुए थे तो हम शाम के वक्त ठंडी सड़क पर घूमने निकले थे. ठंडी सड़क का यह नाम अंग्रेजों के जमाने की देन है. इस सड़क पर उस वक्त भी और अब भी बड़े अफसरों के बंगले है. कभी इस सड़क पर इतने अधिक छायादार वृक्ष होते थे कि इसे ठंडी सड़क कहा जाने लगा था. सुना है किसी जमाने में हिन्दुस्तानियों में तो यहां एक नोटिस बोर्ड लगा था 'जानवरों व इंडियन्स का आना मना है.' मगर आजादी के बाद न केवल वह बोर्ड हटा दिया गया बल्कि एक-एक अनेक भारी भरकम पेड़ काट कर अफसरों की निजी कोठियों के चौखट, दरवाजों में बदल गए. सारी सड़क पर मात्र आठ-दस पुराने पेड़ बचे है, शेष की जगह यूक्लिपटिस तथा पोपलर के पेड़ों ने ले ली हे.

जब हम सैर कर रहे थे, अचानक एक कार एक बड़े पेड़ से जा टकराई. हम इस आशंका से कि कहीं कोई जख्मी न हो गया हो उधर दौड़ पड़े, मगर शुक्र है कि चालक जो एक सोलह साल की नवयौवना थी बाल-बाल बच गई थी. हमारे पहुंचने तक वह कार से बाहर निकल चुकी थी. वह एक मॉर्डन लड़की थी जिसने जीन्स व चोलीनुमा टॉप पहन रखा था. हमारे पहुंचने तक वह कार व पेड़ की भिड़त का मुआयन कर चुकी थी तथा सेल फोन निकाल कर कही बात कर रही थी,'डैडी, आप जल्द आईये, मेरी कार एक स्टुपिड ट्री से टकरा गई हैं.'

"हॉ, मैं घर के नजदीक ठण्डी सड़क पर हूँ, मुझे कोई चोट नहीं लगी है." उसने सेल फोन बंद किया कि एक राहगीर ने पूछ लिया, "बेबी, आप ठीक तो हैं चोट तो नहीं लगी?"

"शटअप यू माइंड योर ऑन बिजनेस. आई एम डीसीज डॉटर" वह चीखी. वह बुजुर्ग राहगीर कान दबाकर चलता बना. ऐसे में मेरे सहायता के मनसूबों पर पानी फिर गया. मैं वापिस लौटने लगा तो सुहैल भाई ने मेरा हाथ पकड़ा और साथ बने पार्क में चले आए. यह पेड़ पार्क के बाहर सड़क के एक कोने पर खड़ा था. पार्क में पहुंचकर सुहैल भाई, पार्क की चारदिवारी के साथ चलते-चलते उसी पेड़ के पास मगर पार्क की चारदिवारी के अन्दर आ खड़ें हुए.

पेड़ की तरफ उंगली उठाकर उन्होंने कहा राजन देखो, प्रकृति की अद्भुत लीला. मैंने देखा और हैरान रह गया पेड़ एक नीम का पेड़ था जिसके मोटे तने पर जमीन से लगभग आठ फीट ऊपर जहां तना दो भागों में बॅटा था एक भाग जो कटा हुआ लग रहा था वहां एक पीपल का तना उठा दिखा. ध्यान से देखने पर पीपल के साथ ही एक छोटा सा बड़ भी वहीं जमीन से आठ फीट ऊपर अपना आसन जमाए आसमान की तरफ बाहें फैलाता दिखा. नीम का तना अपने ऊपरी सिरे पर फूल कर खुल गया था, जहां से पीपल

की जड़ नीचे नीम के तने में घुसी दिख रही थी.

मैं लगभग रोज यहां से गुजरता हूँ, मगर मैंने कुदरत के इस करिश्में पर कभी ध्यान नहीं दिया था. अभी मैं भाव विभोर उस पेड़ को देख ही रहा था कि वहॉ दो-तीन कार व जीप आकर रुकी. उसमें से शहर के डिप्टी कमिश्नर मिस्टर सिंह उनकी पत्नी व उनके कई मातहत व जीप से तीन-चार पुलिस वाले उतरे. डीसी की पत्नी ने बेटी को बांहों में लेना चाहा मगर वह उन्हें परे धकेलकर अपने पिता का हाथ पकड़कर कार व पेड़ की भिडंत दिखाने लगी. बोली, "यू सी पापा, यह पेड़ सड़क के बीचों-बीच खड़ा है और आपके मातहत और आप सड़क पर चलने वालों की सेफ्टी से बेखबर हैं. अगर मैं सावधान नहीं होती तो आज मर ही जाती. इस पेड़ को अभी आज ही कटवाइये." डीसी बोले, "ओके बेबी अभी फॉरेस्ट ऑफिसर को बुलाता हूँ, आज रात ही कट जाएगा यह पेड़. जिससे तुम्हें कार चलाना सीखने में परेशानी नहीं होगी. रामसिंह फॉरेस्ट ऑफिसर को बुलवाकर रात को ही पेड़ काटने के लिए कहा" मगर तभी डीसी की पत्नी बोल उठी,

"नहीं रात को पेड़ नहीं कटवाते और फिर इस पर तो पीपल भी लगा है, यह कल भी नहीं कटेगा कल एकादशी है समझे." "ओके डार्लिंग, परसों कटवा देंगे, खुश." डीसी बोले थे. "ओ नो पाप वट अेन आर्थोडोस ममी इज." लड़की बोली "फिर मैं कल कार चलाना नहीं सीखूंगी." "कोई बात नहीं बेबी एक दिन रेस्ट सही मामा के सेन्टी मेन्टस का ख्याल रखों."

"ओ पापा यू ऑलवेज सरेन्डर बिफोर यूअर वाईफ." लड़की बोली. "वुड यू नॉट लाइक यूअर हसबैड टु बी सबमिसइव" डीसी ने कहा."आ नॉटी पापा."लड़की ने मुस्करा कर कहा" और वे लोग दो मातहतों को कार गैराज भिजवाने को कह कर चले गए. उनकी तरफ से ध्यान हटा तो पाया कि सुहैल भाई होठों से हल्की सी सीटी बजा रहे थे. सुहैल भाई सीटी तभी बजाते है जब वे गम्भीर होते है. मैंने एक सवालिया नजर उनपर डाली तो वे बोले, "चलो मेरे साथ."

मै सुहैल भाई के साथ चलता हुआ बाजार में पहुँच गया. वे एक पेन्टर की दुकान पर खड़े हो गए और बोले, "भईया, एक छोटा सा बोर्ड है? यह जो यहॉ रखा है ना." उन्होंने एक दो गुणा एक फीट के सफेद पुते बोर्ड की तरफ इशारा करते हुए कहा, "बस इतना सा बना दो."

पेन्टर बोला, "क्या लिखना है? लिखकर दे दें तथा कल बोर्ड ले जाएं."

सुहैल भाई बोले, "बस एक अक्षर लिखना है, पर बोर्ड आज ही चाहिए. "पर आज तो रात हो रही है सूखेगा कैसे?" पेन्टर बोला. कोई बात नहीं गीला ही ले जाएंगे. आप इस पर सिर्फ लाल रंग से 'त्रिदेव भगवान' लिख दें. सुहैल भाई का कौतुक मेरी समझ से बाहर था. पेन्टर ने बोर्ड लिखकर सुहैल भाई के हवाले कर दिया. सुहैल भाई ने बोर्ड को कन्धे से ऊपर उठा रखा था जिससे किसी राहगीर से न टकराए. उन्होंने एक पन्सारी की दुकान से थोड़ चावल, रोली व एक गुच्छा मौली, धूप, अगरबत्ती, रूई व दीया खरीदकर मुझे पकड़ा दिया. रास्तें में फल वाले की दुकान से लेकर दो नारियल मुझे सौप दिए. हलवाई से सवा किलो गुलदाना भी ले लिया तथा थोड़ सा घी लेकर हम वापिस उसी पेड़ तक आ गए. तब तक वह कार हटाई जा चुकी थी. सुहैल भाई ने पहले कील गाड़ कर बोर्ड टांगा फिर बड़ी श्रद्धा से मौली पेड़ के तने के चारों ओर लपेट दी. नारियल वहीं फोड़ कर दीया जलाकर धूप अगरबत्ती लगा दी तथा प्रसाद चढ़ाकर राहगीरों को प्रसाद बॉटने लगे. साथ-साथ उन्हें बतला रहे थे कि इस पेड़ पर मन्नत मांगने से उनके बेटे का दाखिला मेडिकल कॉलेज में हो गया, अतः वह त्रिदेव भगवान का शुक्रिया करने नारनौल से यहॉ पहुँचे है. आपने कभी ऐसा चमत्कार देखा है कि नीम का कड़वा पेड़, पीपल और बड़ को अपने ऊपर उगने दे. सब ऊपर वाले की लीला है, आप बड़े भाग्यशाली है जो आपके शहर में त्रिदेव भगवान प्रकट हुए है. मैं सुहैल भाई के साथ वहॉ लगभग डेढ़ घंटा खड़ा रहा और सुहैल भाई ने तब तक सात-आठ लोगों को त्रिदेव भगवान का प्रसाद खिला दिया था. दस-पांच लोग वहीं हमारे पास खड़े होकर आने-जाने वालों को रोक रहे थे. अच्छा खासा मजमा इकट्ठा हो गया. जाने कहॉ से सिटी केबल वाला टीवी कैमरामैन वहॉ पहुँच गया. उसने पूरे प्रकरण की फिल्म बना डाली. जब हम घर वापिस पहुँचे तो सिटी केबल पर सुहैल भाई प्रसाद बॉटते नजर आ रहे

## ग़ज़ल

मोहब्बत के मानी बदलने लगे है
मेरे दोस्त मुझसे झगड़ने लगे है
नहीं ग़ेर की बेवफाई का शिकवा
वो अपने है जो मुझको छलने लगे है
रकीबो को खुशिया अता कर रहे है
वो बनकर सवंर कर निकलने लगे है
जिन्हें देखकर मुस्कुराती थी कालिया
वो मंज़र भी ऑखों से जलने लगे है
सुकूं जिससे मिलता था राही हमेशा
उसी दिल से शोले उबलने लगे है।

**अब्दुल समद राही**, सोजत सिटी, राजस्थान

थे. मेरी धर्मपत्नी पूरी खबर सुन चुकी थी. वह मुस्करा कर बोली, "भाई साहिब, आपतो छुपे रूस्तम निकले, न शादी की खबर न लड़का होने की, सीधे बेटे के डॉक्टर बनने की खबर मिली है वह भी सिटी केबल से."

सुहैल भाई मुस्करा कर बोले, "भाभी आवश्यकता आविष्कार की जननी है, सो सबकुछ आनन-फानन में करना पड़ा."

मैं पाठकों को बतला दूं कि सुहैल भाई चिर कुंआरे है.

सिटी केबल पर खबरें खत्म हुई ही थी कि सुहैल भाई ने टेलीफोन डायरेक्टरी उठाकर फोन करने शुरू कर दिए. बातचीत से लग रहा था कि वह अखबार वालों से बात कर रहे हैं.

"हॉ साहब, ठंडी सड़क पर दशकों से खड़े त्रिदेव भगवान के पेड़ को आला ऑफिसर की बेटी के कहने पर कटवाया जा रहा है. यह हमारी धार्मिक भावना को ठेस पहुँचाना है, हम मर जाएंगे मगर पेड़ नहीं कटने देंगे आदि-आदि. फिर उन्होंने कही और फोन मिलाया और बोले, "आप कैसे महामंत्री है धार्मिक संगठन के. आपके शहर में ठंडी सड़का पर खड़े त्रिदेव भगवान के पेड़ का कत्ल किया जा रहा है और आप चुप है." जी हॉ जाकर देखिए. इस तरह लगभग बीस फोन करने के बाद सुहैल भाई ने मेरी पीठ पर धौल लगाया और बोले, देखता हूँ अब कौन हाथ लगाता है मेरे प्यार पेड़ को.

सुबह जब हम सैर को निकले तो अजब तमाशा था. पेड़ पर मौली बॉधी जा रही थी. अनेक औरतें व कुछ आदमी नारियल दिये व प्रसाद लिए खड़े थे. कुछ दीये पहले ही जल रहे थे. सुहैल भाई ने भी वहॉ जाकर दण्डवत प्रणाम किया, त्रिदेव भगवान को. कुछ लोग जो उन्हें सिटी केबल पर देख चुके थे, उनसे बाते करने लगे. उन्हें उनके बेटे के मेडिकल में एडमिशन पर बधाई देने लगे. सुहैल भाई हाथ जोड़कर पेड़ की तरफ इशारा करके कह रहे थे, "सब त्रिदेव भगवान की कृपा है भाई साहब. आप बड़े भाग्यशाली हैं, ऐसा चमत्कारी पेड़ मैंने तो सारी जिन्दगी में कहीं नदीं देखा. आपने देखा है?"

उसी दिन शाम को जब हम वहॉ पर दोबारा गए तो पाया कि लोग न केवल जोत लगा रहे है अपितु "जै, जै त्रिदेवा." की आरती भी गा रहे थे. ढोल व मंजीरे भी पहुँच चुके थे. रात्रि को सिटी केबल पर त्रिदेव भगवान पर विशेष प्रोग्राम दिखाया गया तथा दो-तीन नेशनल न्यूज चैनल्स पर भी इस खबर की क्लिप दिखाई गई.

अब सुहैल भाई निश्चिंत थे कि पेड़ को कोई हाथ नहीं लगा पाएगा. आज एक साल बाद सुहैल भाई फिर मेरे पास ठहरे है. मैंने उन्हें बतलाया कि अब तो हर शाम त्रिदेव भगवान की आरती पूजा होती है तथा हर सोमवार को एवं एकादशी को तो मेला सा लग जाता है. कल एकादशी है, आपको दिखलाऊँगा चमत्कार.

सुहैल भाई हॅसकर बोले, "प्रणव, मुझे तो प्रकृति के एक सौहार्दपूर्ण तुजुर्बे की जो नीम ने पीपल व बड़ को अपने भीतर स्थान देकर कर दिखाया है, रक्षा करनी थी. मेरा कार्य पूरा हो गया, मुझे इसका सन्तोष है, पर अब मैं वहॉ पर नहीं जाऊँगा. मुझे अपनी चालाकी पर स्वयं हॅसी व शर्म आ रही है"

तभी मेरी धर्मपत्नी ने टहोका, "भाई साहब हमारे डॉक्टर भतीजे के ब्याह में तो हमें बुलाएंगे ना?" सुहैल भाई हंस कर बोले "भाभी अब इस बूढ़े पठान से कौन दोशीजा निकाह रचाएगी.

++++++++++++++++++++

## कहॉ आ गया हूँ यार

अपनों से दूर, रोटी को मजबूर
कहॉ आ गया हूँ यार?
शहर आ गया हूँ यार।
सुख चैन की तलाश।
छोड़ अपनों का पास।।
रेगिस्तान का पलाश
बनके आ गया हूँ यार
सुख शान्ति नहीं है।
सारा शोर यहीं है।।
कोई अपना नहीं है।
निरा स्वार्थ का संसार।।
शहर आ गया हूँ यार।
कहीं ऊँची मीनार।
कहीं छत से दो-चार।।
नन्हा बचपन कहीं।
कूड़े ढ़ेर को उधार।।
खोजता है दो रोटी।
तन में तेज है बुखार।।
कहॉ आ गया हूँ यार।......
बड़ी भूल हो गयी।
अपना गॉव छोड़कर।।
कहॉ आ गया हूँ मैं।
पीपल की छॉव छोड़कर।।
अपनी करन पर खुद
शरमा गया हूँ यार।।
शहर आ गया हूँ यार।।
सुन के तबियत खराब।
पूरा गॉव जुटा था।।
मेरा दुःख बॉटने को।
हर पॉव बॉटने को।
हर पॉव उठा था।
यहॉ किसको है फुर्सत।
मेरा हाल पूछ ले।।
कोई दिखता नहीं जो,
मेरा हॉल पूछ लें।।
इस कुबेर पुरी से
कहीं अच्छा भला था,
मेरा दीनों का दरबार
कहॉ आ गया हूँ यार।।

**कैलाश नाथ पाण्डेय,** बरहज, देवरिया

प्रिय भैया/बहिनों

आप लोगों को कहानी पढ़ना व सुनना तो अच्छा लगता ही होगा. इस बार मैं आप लोगों को बंदर मामा और अप्रैल फूल दो कविताएं दे रही हूँ. अच्छी लगे तो जरुर जरुर लिखना.

आपकी बहन
संस्कृति 'गोकुल'

## बंदर मामा

बंदर मामा,
पहन पजामा
निकले बारिश में घुमने।
आया पानी,
छतरी तानी,
लगे हवा में उड़ने।
अरे बचाओ,
हमें छुड़ाओं,
लगे जोर से चिल्लाने।
दौड़ी चिड़िया,
बोली ''भैया'
आती तुम्हें छुड़ाने।
उड़ी साथ में,
बात बात में
चोचों से फाड़ा कपड़ा।
गिरे धम्म से
बोले हमसे
छोड़ो घुमने का लफड़ा

## २. अप्रैल फूल

हम बच्चे हैं फूल फूल
किंतु नहीं अप्रैल फूल।
बोला हाथी से भालू जी,
ले यह ठण्डा पानी पी।
हाथी ने जब सूंढ डुबाई,
जोरों से चिल्लाया हाई।
इसमें तो है नीम बबूल।
हम बच्चे है फूल फूल।।
कोयल बोली कौए से,
चल अब मेरे अंडे सेह।
कौआ लगा फेंकने अंडे
कौओ ने दिखलाए डंडे।
एक तारीख है ये मत भूल।
हम बच्चे हैं फूल फूल।।
तितली कहती मिंकी से,
लाई फ्राक हूं पिकी से।
क्या लायेगा तेरा भाई,
मिंकी करने लगी लड़ाई
फ्राक नहीं पंखो का फूल।
हम बच्चे है फूल फूल।।

## स्नेह बाल प्रतियोगिता-०२

इसमें ५ से १२ वर्ष की उम्र के बच्चों को नीचे दिए गए विषय पर चित्र बनाकर भेजना होगा. प्रथम आने वाले चित्रकार का सचित्र परिचय, द्वितीय एवं तृतीय आने वाले चित्रकार का परिचय प्रकाशित व प्रमाण पत्र दिया जाएगा. **विषय.झगड़ा मत करो**

**कूपन लगाना न भूलें**

प्रतिभागी का नामः........................................................
पिता का नामः....................................कक्षाः....................
स्कूल का नामः............................................................
पताः.......................................................................

## नन्दलाल भारती को कलम कलाधर की मानद उपाधि

इण्डियन सोसायटी आफ आथर्स के सदस्य एवं कई सम्मानों से विभूषित साहित्यकार श्री नन्दलालराम भारती को विगत दिनों अखिल भारतीय साहित्य संगम, उदयपुर, राजस्थान द्वारा राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान २००७ के अन्तर्गत कलम कलाधर की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया. श्री भारती कविता, कहानी, लघु कथा संग्रह एवं उपन्यास सहित कई पुस्तकें लिख चुके हैं. श्री भारती सामाजिक एवं सास्कृतिक मूल्यों को पल्लवित करने के उद्‌देश्य से साहित्य सेवा से जुड़े हुए हैं. पत्रिका परिवार व विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान श्री भारती को बधाई देता हैं.

## बलवंत मनराल अचेतः रक्त स्राव, पक्षाघात का खतरा टला

१८ अप्रैल, रात्रि स्नायुविक की गड़बड़ी से मनराल जी कई घंटो तक अचेत रहे. उनका दिमाग लगभग सुन्न हो गया था. ये दवायें, उपलब्ध होने के बाद भी नसों के अत्यधिक अवरुद्ध होने से रक्त स्राव कई दिनों तक चला. इससे यद्यपि कमजोरी तो बहुत हो गई थी, लेकिन इसी से पक्षाघात का खतरा टल गया. इसके पूर्व १९८७ में भी पक्षाघात हो चुका है. संयोगवश उस समय भी अकेले थे और अबकी बार भी अकेले ही थे. मनराल जी इसे हनुमान जी, माता अमृतानंदमयी की कृपा मानते है. पत्रिका परिवार आपके मंगलमय भविष्य की कामना करता है.

## एक कवि की चाह

जन्म लिया जब से धरती पर
हिन्दी ही हिन्दी पायी है।
हिन्दी खायी, हिन्दी पी है;
हिन्दी की ओढ़ी रजाई है।
अब एक सदिच्छा है बाकी
जब अन्त समय में हो जाना;
बस मेरी अर्थी पर यारों!
हिन्दी का कफन उढ़ा देना।

**जीवितराम सेतपाल**, संपादक, प्रोत्साहन

**अभिव्यक्ति त्रैमासिक**
**संपादकः श्री गोपाल कौशल**
२०,कौशलधाम सदन, बस स्टैण्ड, ग्राम-माकनी, पो. नागदा,जिला-धार,म.प्र.

**तूफान हि.सा**
**संपादकः श्री गया प्रसाद**
डिहरी ऑन सोन, ८२१३०७

# कविताएं

## वंदेमातरम्

वंदे मातरम् वंदेमातरम् वंदे मातरम गाता चल,
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई सबको गले लगाता चल।
सत्य अहिंसा प्रेम शान्ति की भाषा सबको प्यारी,
प्रेम और सद्भाव समर्पण मानव की हकदारी।
गंगा यमुना सरस्वती पावन कृष्णा कावेरी,
विन्ध्य हिमांचल ऋिष्मूक मेंकल को शीश नवाता चल।
वंदे मातरम् वंदेमातरम् वंदे मातरम गाता चल।
आजादी के महासमर में जिनने लहू चढ़ाया,
हॅस हॅस फॉसी के फंदे को अपने गले लगाया।
उन पावन चरणों की रज को माथे तिलक लगाना है,
भारत मां के वीर सपूतों पौरुष अब दिखलाना है।।
उन वीरों की कुर्बानी के गीत मनोहर गाता चल,
वंदे मातरम् वंदेमातरम् वंदे मातरम गाता चल।
सत्ता के ठेकेदारों के किस्से अजब निराले,
हमने ही अपनी भूलों से आसतीन में पाले।
देश धरम की रही न चिन्ता गद्दी के गद्दारों को,
आज सबक सिखलाना होगा इन झूठे मक्कारों को।
मक्करों करतूतों का सच्चा सबक सिखाता चल,
वंदे मातरम् वंदेमातरम् वंदे मातरम गाता चल।
कोरे इंकलाब नारों से पेट नहीं भर पायेगा,
भूखे पेट तड़पता बचपन कब तक धोखा खायेगा।
बेच रहे है देश की अस्मत खेल रहे हैं आन से,
उनको लात मार कर बाहर कर दो हिन्दुस्तान से।
मातृभूमि के लिए जिन्दगी जीना उन्हें सिखाता चल,
वंदे मातरम् वंदेमातरम् वंदे मातरम गाता चल।

**डॉ. मोहन तिवारी आनन्द,** संपादक-कर्मनिष्ठा, भोपाल, मप्र

++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++++

## गीत

बॉझ हुई सदियों की आशा शून्य रहा परिणाम।
पतझर के चेहरे पर लिख दें अब बसंत का नाम।
अब न कहीं भी गॉव-गली में,
घर-घर पहुँचें अरुणोदय की,
अब बासन्ती लाली।
पनघट-पनघट गुलशन महकें घूघट हो गुलफाम।
पतझर के चेहरे पर लिख दें अब बसंत का नाम।
धरती से नभ तक मुस्काते
सभी नज़ारे अपने।
धानी चूनर ओढ़ के झूमें,
पतझर सूखे सपने।
प्यासे होठों तक पहुँचाएं अब खुशियों के जाम।
पतझर के चेहरे पर लिख दें अब बसंत का नाम।
हर मौसम की ऑख न जाने,
सदियों से क्यूँ नम है?
और बसंत जिसे समझे हम,
केवल छल है भ्रम है।
फूलों वाला असली मौसम ढूढें हम अविराम।
पतझर के चेहरे पर लिख दें अब बसंत का नाम।
कैसे यू संगीत सजेगा
जब तक सुर न मिलेगें।
और आंगन में मायूसी के,
फूल कभी न खिलेगें।
उटठों छीन के लाएँ अपना हम बसंत अभिराम।
पतझर के चेहरे पर लिख दें अब बसंत का नाम।

**भगवान दास जैन,** अहमदाबाद, गुजरात

++++++++++++++++++++++++++++++

## धरती को स्वर्ग बनाये हम

गोरी के पॉव थिरकते थे, हर वक्त सुनहरे सावन में।
कजरी सुन मेघ बरसते थे, हरवक्त सुनहरे सावन में।।
यह धरा सुहावन लगती थी सच सतरंगी परिधानों से।
उपवन में बजती शहनाई, खगकुल के मीठे गानों से।।
पर कहॉ गयी कोयल रानी पपिहा ने भी सन्यास लिया।
क्यों रुठ गया भौरों का दल किसने वन से वनवास दिया।।
वह आम्र कुंज महुवा बारी, वह बॉसदेव किस देश गये।
जिसमें जीवों के वंश पले वे कहॉ सभी परिवेश गये।।
आंगन में दादी दंत ही चंदा से दूध मंगाती थी।
लोरी गाती थपकी देती हिमकर, को पास बुलाती थी।
आ गयी व्याधि की बाढ़ यहॉ, अब सच्चा वैद्य हकीम नहीं।
तुलसी का विरवा मुरझाया वन में औषधि तरु नीम नहीं।।
गर्मी से व्यधित पथिक बैठे आखिर किस तरु की छाया में।
फलहीन वृक्ष की शाखों पर पक्षी बैठें किस माया में।।
ओजोन परत कमजोर हुई अब जगती का कल्यान नहीं
यह विश्व पुरा जल जायेगा यदि चेता यह इंसान नहीं।
हम जगें जगाये जन-जन को नियति का दोहन बन्द करें।।
सागर सरिता गिरि वन उपवन वसुधा का शोषण बन्द करें।
बन 'रामेश्वर' पी जाये गरल जीवन को सफल बनायें हम।
मिलकर प्रदूषण दूर करें धरती को स्वर्ग बनाए हमं।।

**रामेश्वर प्रसाद यादव,** बरहज, देवरिया

# मघा में जन्में होते हैं जिम्मेदार

मघा नक्षत्र का नक्षत्र मंडल में दसवॉ स्थान है. मघा नक्षत्र के चारों चरण सिंह राशि में आते है. इस नक्षत्र का स्वामी केतु है. राशि स्वामी सूर्य है. मघा नक्षत्र में जन्में जातक अधिक जिद्दी स्वभाव के तथा मध्यम कदकाठी के होते है. अकसर इनकी लंबाई ५ फीट ६ इंच के आसपास होती है. ऐसे जातकों के रोम अधिक होते हैं.

ये स्पष्टवादी, निर्भिक, साहसी, घमंडी होते हैं, लेकिन स्वयं के कार्य में फुर्तीले होते हैं. इनको आदेश देकर कोई काम नहीं करवाया जा सकता है, बल्कि इनसे नम्रतापूर्वक या आग्रह करके कोई भी कार्य निकाला जा सकता है. ये किसी भी बात को जल्दी ही समझ जाते है, बस समझाने वाला होना चाहिए.

ऐसे जातक विद्वानों के बीच सम्माननीय भी होते हैं. ये व्यवहार में दूसरे के प्रति अत्यंत कुशल होते हैं. अनावश्यक लोगों से ये दूरी बनाए रखते हैं.

ऐसा जातक किसी भी प्रकार से अन्याय सहन नहीं करते न ही झूठ बोलना पंसद करते हैं. इस प्रकार जातक ऐसा कोई कार्य करते है, जिसके कारण इन्हें शोहरत मिलती है.

इस नक्षत्र में जन्मी कन्या मुँहफट, स्पष्टवादी, जल्द मान जानो वाली, निर्भिक, साहसी, स्वार्थी, उच्चाभिलाषी, उच्चस्तर की आजीविका पंसद करने वाली, गुप्त कार्यो में रुचि रखने वाली भी होती है. कुछ एक लड़कियॉ खेल जगत में भी देखी जा सकती है.

उपरोक्त दोनों ही आर्थिक क्षेत्र में अपने परिश्रम के द्वारा ही संपन्नता प्राप्त करते हैं. ये बड़ों के प्रति आस्थावान भी होते है. इस नक्षत्र में जन्मी महिलाओं पर सूर्य व केतु का अधिक प्रभाव होने से ये जिद्दी होने के कारण अपना दांपत्य जीवन नष्ट कर लेती है या ये अपने पति पर अपनी धाक जमाए रहती है.

यदि शनि केतु के नक्षत्र मघा में हो और मंगल की दृष्टि शनि पर हो तो उसका पारिवारिक जीवन खराब ही रहता है. ऐसे अपने भाई-बहन को, अपने चाहने वालों की जिम्मेदारियों को पूर्ण वहन करने वाले होते हैं.

शिक्षा के क्षेत्र में यदि चंद्रमा के साथ गुरु की युति हो तो इस नक्षत्र में जन्मी महिला ऐशोआराम का जीवन जीने वाली, डाक्टर, वकील या प्रशासनिक सेवाओं में भी होती है.

इनका विवाह उच्च घर में होता है. यदि सूर्य नीच का हो व शनि केतु के नक्षत्र में हो तो उनका पारिवारिक जीवन नष्ट हो जाता है या तनावपूर्ण बना रहता है.

यदि सूर्य उच्च का या स्वराशि का हुआ तो ऐसे जातक प्रशासकीय विभाग में लेखक, पत्रकार आदि कार्यो में सफलता पाते हैं. यदि उधा का सूर्य हो और गुरु की दृष्टि पड़ रही हो तो ऐसे जातक धर्म के प्रति निष्ठावान, न्यायप्रिय, स्नेही, अपने मित्रों का भला चाहने वाले एवं भाग्यशाली भी होते है. यदि इनका जन्म पूर्णिमा में हुआ हो तो ये अत्यंत धनवान भी होते है. यदि जन्म लग्न में सूर्य-केतु साथ हो तो ये जिद्दी भी होते है एवं जिस भाव में होंगे, उस भाव की स्थिति अनुसार प्रभावशील होंगे. इनमें अपूर्व विचारशक्ति एवं सही पूर्वानुमान लगाने की भी अद्भुत क्षमता होती है.

**साभारः** युनाईटेड भारत, इलाहाबाद

++++++++++++++++++++++++

## सात समुन्दर पार हिन्दू धर्म की पढ़ाई

न्यूयार्क. हिन्दुत्व में भारतीय अमेरिकी छात्रों की दिलचस्पी को मान्यता प्रदान करते हुए अमेरिका के न्यूजर्सी प्रान्त की रटगर्स यूनिवर्सिटी दुनिया के इस सबसे प्राचीन धर्म के अध्ययन के लिए एक व्यापक कार्से शुरु करेगी. इन गर्मियों से विश्वविद्यालय के छह पाठ्यक्रम शुरु करेगा. नमें वाचन परम्परा हिन्दू संस्कार महोत्सव और प्रतीक के कोर्स स्नातक स्तर पर शामिल होंगें. हिन्दू दर्शन और हिन्दुत्व तथा आधुनिकता भी पाठ्यक्रम में शामिल होगा. इसके अलावा नान क्रेडिट कोर्स में योग और ध्यान तथा हिन्दू शास्त्रीय और लोकनृत्य शामिल किये जायेंगें. स्टगर्स यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर और हिन्दू अध्ययन पर ग्रीष्म कार्यक्रम के प्रभारी डॉ. माइकल शेफर ने कहा, अमेरिका में बहुत कम संस्थान ऐसे व्यापक आधार वाले कार्यक्रम की पेशकश करते हैं जो रगटर्स इन गर्मियों से शुरु करने जा रहा हैं.

उन्होंने कहा, हिन्दुत्सव पर कुछ विश्वविद्यालय विद्वतापूर्ण पाठ्यक्रम चलाते हैं और कुछ संस्कृत में पाठ्यक्रम की पेशकश करते है लेकिन रटगर्स समर हिन्दू स्टडीज प्रोग्राम इस मायने में विशिष्ट है कि यह दस सप्ताह की अवधि में व्यापक विषयों को समाहित करता हैं.

**साभारः** अयोध्या संवाद


**मेडिकल दर्पण**
**संपादकः श्री ब्रजेश गर्ग**
बी.एन.मेडिकल कॉम्पलेक्स, बुलन्दशहर, उ.प्र.

**राजभाषा किरण**
**संपादकः श्री अनंत कुमार साहू**
पो.बा. ११२६८, चर्चगेट, मुंबई-४०००२०,

## भोजपुरिया समाज राउर आभारी रही

पत्रिका का नवम्बर ०६ अंक मिला. सम्पादकीय सम्पादकों के सम्पादकीय जीवन का खुला चिट्ठा तो है ही उसके जीवन के एक दुखद पहलू का सजीव चित्रण भी है. विभिन्न सम्पादकों की सम्पादकीय चुनौतियों पर बेबाक विचार सम्पादकों के लिए एक सबक हैं.

हिन्दी पत्रिका में भोजपुरी कहॉनी बहुत बढ़िया लागल. भोजपुरी के रउआ अतना सम्मान देनी, भोजपुरिया समाज राउर आभारी रही.

रामसहाय वर्मा का व्यंग्य बहुत ही अच्छा लगा. श्रीमती सपना गोस्वामी का आलेख युवा पीढ़ी के लिए सबक है. काव्यखंड भी दमदार है. विश्व स्नेह समाज के प्रकाशन के छः वर्ष पूरे हुए, यह जानकर अतीव प्रसन्नता हुई. यह आपकी कर्मठता का ही परिचायक है. आप अपने उद्देश्य में दिन-प्रतिदिन सफलता हासिल करते रहें, यही कामना है.

सितम्बर अंक में सम्पादकीय के माध यम से आपने भारतीय समाज में श्राद्धकर्म के नाम पर होने वाले अनुचित कार्यो का खुलासा कर अच्छा कार्य किया है. श्राद्धकर्म क्या हुआ? एक पिकनिक हो गया. पर मौज मस्ती, क्या यह साबित नहीं करता कि हम श्राद्धकर्म के नाम पर उस मृत व्यक्ति का मजाक उड़ाते हैं, उसकी आत्मा को सुख देने के नाम पर दुखी करते हैं. भ्रष्टाचार का वास्तव में राष्ट्रीयकरण हो गया है. ठीक ही लिखा है 'रिश्वतमेव जयते' हमारे समाज में आज भ्रष्टाचार का ही बोलबाला है. क्या जनता, क्या नेता, क्या अफसर, क्या अधिकारी, सबके सब आकंठ भ्रष्टाचार के दलदल में डूबे हुए है तो फिर ईमानदारी खोजने पर कहॉ मिलेगी. डॉ. राजबुद्धिराजा का आलेख पठनीय तो है ही, संग्रहणीय भी है. कुमारी श्रद्धा एवं डॉ.एन.एस.शर्मा का आलेख भारत की राष्ट्रभाषा 'हिन्दी' की दुर्दशा का सजीव चित्रण है. लघुकथाओं में व्यंग्य का अच्छा पुट है. चुटकुले भी काफी गुदगुदाने वाले हैं. पत्रिका का यह अंक साहित्य की विभिन्न विधाओं की रचनाओं को अपने अंदर समेटे काफी अच्छा लगा.

**डॉ० दिनेश प्रसाद शर्मा,** भोजपुर, बिहार

+++++++++++++++++++++

पत्रिका का अंक मिला. धन्यबाद. प्रकाशित कहानी, व्यंग्य, अध्यात्म लेख, सहित अन्य रचनॉए पसंद आयी. यह पत्रिका मुझे पहली बार देखने को मिली. इलाहाबाद ऐसी पुण्यभूमि है जहॉ पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन की ऐतिहासिक परंपरा रही है. शेष मंगल.

**श्रीकान्त व्यास,** पटना, बिहार

+++++++++++++++++++++

पत्रिका का फरवरी ०७ का अंक पढ़ा. इस अंक में लेख 'इलाहाबाद के ऐतिहासिक दर्शनीय स्थल' बहुत अच्छा लगा. डॉ. राज बुद्धिराजा की बाल कहॉनी 'चॉद वाली राजकुमारी' रोचक रही.

श्री एन.के. शर्मा का लेख 'प्रबन्ध अथवा प्रबन्धन आखिर है क्या? बहुत उपयोगी रहा. नन्दलाल भारती की लघुकथा 'समझौता दहेज की लिप्सा को व्यक्त करती सशक्त रचना है.

**राजीव कुमार 'हिन्दीपुत्र',**बरेली, उ.प्र.

+++++++++++++++++++++++

पत्रिका का अंक मिला. मै इलाहाबाद कई बार आया पर इस पत्रिका का नाम नहीं सुना था. किन्तु आपने अच्छा किया. पत्रिका अच्छी लगी. छायाचित्रों की प्रिन्टिग के लिए मुद्रक से कहे कि स्याही अच्छी लगाये. अन्य सामग्री ठीक है.

**सूर्यदीन यादव,**
संपादक, रचनाकर्म, नदियाद

+++++++++++++++++++++++++++

## कम समय में ही आपने हिन्दी जगत में पत्रिका को स्थापित कर दिया है

आपकी यशस्वी पत्रिका का अर्द्धकुम्भ विशेषांक मिला. धन्यबाद. मुख्य पृष्ठ पर आद्यगुरु शंकराचार्य का चित्र अवसर के अनुकूल देखकर मनिमभाव का अकुंरण होता है. कम समय में आपने इस पत्रिका को हिन्दी जगत में स्थापित कर एक सम्मानीय स्थान दिला दिया है. यह आपकी लगन एवं समर्पण का प्रभाव है. रचनाएं भी समयानुकूल होती है. अनेक विषयों को लेकर रचनाएं देना बड़ें जीवंट का काम है. पाठक वर्ग में भिन्न-भिन्न रुचियों का ध्यान रखकर रचनाओं का चयन किया जाना यह दर्शाता है कि आप अपने पाठको के प्रति कितने जागृत है. सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश के बारे में काम की जानकारी देकर आपने जनमानस में उनके सम्मान को और भी बढ़ाया है. अमरीकी दादागिरी का वर्णन रोचक हैं परंतु ये तथ्य सबको ज्ञान होने चाहिए ताकि उसका आकलन हो सके.

**राजेश्वरी शाडिल्य,** संपादक,भोजपुरी लोक, लखनऊ

+++++++++++++++++++++

## कोटिशः बधाई

यादगार कार्यक्रम हेतु कोटिशः साध ुवाद. नैह निभावें. परिवार में सबको प्रेम प्रणाम. आपके सबल सहयोगियों के लिए आशीष. नैह भरा स्नेहाभिवादन.

खुदा तुम्हारी उम्र दराज करें
हिन्दुस्तान तुम पे नाज करें.

वंशीलाल पारस, भीलवाड़ा, राजस्थान

+++++++++++++++++++++

इस प्रकार की मासिक पत्रिकायें भी विचारों और भावनाओं का आदान-प्रदान करती है.

सत्य अहिंसा
माला काफी जली है
मिला न कुछ।
गधे पुजते
इस देश में खूब
विशेषता है।
शान हैं आज
गन्धर्व विवाह व
वर्ण संकर।
दर्द का रिश्ता
किसी का नहीं
सुख संसार।

डॉ० अनुपम, नैनीताल, उत्तरांचल

++++++++++++++++++++

मुस्कानों की सरल धरा पर
तुमको आकर बसना है
आसपास हो मुश्किल जितने
उतना ज्यादा हंसना है
जीवन सफल तभी तब होगा
हंसते हंसते चलना है

डॉ. नरेन्द्र नाथ लाहा, ग्वालियर, म.प्र.

++++++++++++++++++++

ढेर सारे फूलों के सुगन्ध से भरी शुभकामनाएं.

**इनके भी पत्र मिले-**

१.डॉ. श्याम मनोहर व्यास, उदयपुर, राजस्थान
२. सुजीत वर्मा, मथुरा
३. अभिराम गोयल,अलीगढ़
४. रामकिशोर सिंह 'विरागी',पटना
५. कुमार अशोक, राजनंदगॉव, छत्तीसगढ़
६. तेजरामशर्मा, शिमला
७.महावीर प्रसाद मूकेश, सिरसा, हरियाणा
८. श्रद्धा, हैदराबाद
९. प्रेमसिंह चेतन, मुंबई
१०. नवीन कुमार, लुधियाना, पंजाब
११. रामशरण, भिवानी, हरियाणा
१२. हरेश काननी, गुजरात

## सीताराम शेरपुरी को एक और सम्मान

उन्मुक्त के संपादक सीताराम शेरपुरी के उपलब्धियों की लड़ियों में एक और लड़ी तब आ जुड़ी जब इन्हें भारतीय साहित्यकार संसद, समस्तीपुर द्वारा महावीर प्रसाद द्विवेदी राष्ट्रीय शिखर सम्मान से सम्मानित किया गया. राष्ट्रीय साहित्यकार सम्मान समारोह ०७ में लब्ध साहित्यकार डॉ. सियाराम तिवारी के कर कमलों से इन्हें यह प्रतिष्ठित सम्मान प्रदान किया गया.

## प्रोत्साहन के ६९वें अंक का लोकार्पण

प्रोत्साहन के ६९वें अक का विमोचन न्यू इण्डिया कोआपरेटिव बैंक यारी रोड, के मैनेजर श्री एस.के. देशपाण्डे के कर-कमलों द्वारा हुआ. उन्होंने विमोचन करते हुए कहा-'पत्रकारिता का उद्देश्य होता है आम आदमी के दुःख-दर्द को उजागर करना, बिना भेदभाव नवोदियों की रचनाओं को छापना. मुझे खुशी है, यह कार्य 'प्रोत्साहन' पत्रिका बखूबी निभा रही है. ३८ साल प्रकाशन के कम नहीं होते. हमारी शुभ कामनायें तथा सहयोग 'प्रोत्साहन' को मिलता रहेगा.' इस अवसर पर कवि सम्मेलन का भी आयोजन किया गया.

## डॉ० वीरेन्द्र कुमार दुबे भारत सरकार के खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय के सदस्य मनोनित

जबलपुर, भारत सरकार के खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय के अवर सचिव भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा द्वारा हिंदी मासिक विश्व स्नेह समाज के जबलपुर ब्यूरो डॉ० वीरेन्द्र कुमार दुबे को म०प्र० में टास्क फोर्स फुड प्रोसेसिंग के रखरखाव एवं आवश्यक परीक्षण कार्य के लिये सदस्य मनोनित किया हैं.डॉ. दूबे जबलपुर नगर के पूर्व महापौर एवं पूर्व विधायक स्व० डॉ. के.एल.दूबे के सुपुत्र हैं. डॉ दूबे को अखिल भारतीय साहित्य संगम, उदयपुर के द्वारा राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान २००७ के अन्तर्गत 'अक्षरादित्य' के सम्मान तथा भारतीय ग्रामीण पत्रकार संघ, जयपुर द्वारा उनके कार्य क्षेत्र, समाज एवं देश की प्रगति के लिए की गयी उत्कृष्ट सेवाओं को देखते हुए सम्मानित किया गया है. उल्लेखनीय है कि राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न संस्थाओं हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वारा 'साहित्य महोपाध्याय, महादेवी स्मृति सम्मान, भारतीय परिषद, प्रयाग द्वारा शाश्वातामृत सम्मान, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद द्वारा साहित्य मेला -२००७ में प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया हैं.

**सामयिकी**
**संपादकः श्री श्याम सुंदर 'सुमन'**
बी-३२०, सुभाष नगर, भीलवाड़ा
३११००१, राजस्थान

---

**मासिक शुभ तारिका**
**संपादकः श्रीमती उर्मिकृष्ण**
कहॉनी लेखन महाविद्यालय, अम्बाला
छावनी- १३३००१, हरियाणा

---

**उ०प्र० मजदूर दर्पण साप्ताहिक**
**संपादकः श्री गौरीशंकर मिश्र**
सदर बाजार, शाहजहॉपुर, उ०प्र०

---

**कविताश्री**
**संपादकः श्री नलिनीकांत**
अण्डाल, पंश्चिम बंगाल

---

**मित्र संगम पत्रिका**
**संपादकः श्री प्रेम वोहरा**
३५बी, पुरानी गुप्ता कॉलोनी, दिल्ली-११००९

---

**मासिक ऋषि की आवाज**
**सपादकः श्री सुभाष बजाज**
१२/६, गांधी नगर, रोहतक

# आरोग्य बरकरार रखनेवाले सात प्रणायाम

रामदेव के अनुसार प्रतिदिन प्रणायाम करे और आजीवन स्वस्थ रहो. शक्ति, ताकत और समय हो तो आसन भी करो.

**उदगीतः** अमूमन प्राणायाम की शुरूआत उदगीत से होती है. पद्यासन में बैठ कर आंख बंद कर सांस अंदर भरते हुए जोर से ओम शब्द का उच्चारण करना चाहिए. यह कम से कम तीन से पांच बार करना चाहिए. यह कम से कम तीन से पांच बार करना चाहिए. ओम शब्द के उच्चारण के वक्त व्यक्ति को अपने आपको शून्य में ले जाने की कोशिश करनी चाहिए. चित्त को शांत और शरीर को सामान्य स्थिति में रखनी चाहिए. रीढ़ की हड्डी को सीधा रखना चाहिए.

**भस्त्रिकाः** व्यक्ति पद्यासन में बैठ कर सांस गहरा अंदर लेता है फिर नाक से सांस बाहर छोड़ता है. ऐसा करते समय साधक की रीढ़ की हड्डी सीधी रहनी चाहिए और मन को शांत रखना चाहिए.

भस्त्रिका प्राणायाम से फेफड़ा, सिर, पेट की बीमारियां दूर होती है. स्वामी रामदेव की मानें तो व्यक्ति भस्त्रिका, कपाल भाति और अनुलोम विलोक कर, अप्रत्याशित लाभ अर्जित कर सकता है. इस प्राणायाम को कम से कम पांच मिनट तक करना चाहिए.

**कपाल भातिः** कैंसर, ब्लड प्रेशर, शूगर जैसी लाइलाज बीमारियों के ठीक होने के पीछे इस प्रणायाम की सबसे अधिक भूमिका है. कपाल भाति में व्यक्ति को सांस अंदर नहीं लेकर नाक से छोड़ना चाहिए. यह प्राणायाम भी कम से कम पांच मिनट करना चाहिए. अगर कोई बीमार है तो उसे योग प्रशिक्षक के बताये अनुसार १५ से ३० मिनट तक करना चाहिए. साधक को इस प्राणायाम में एक मिनट में ६० स्ट्रोक देना (सांस बाहर) चाहिए.

**अनुलोम-विलोमः** इस प्राणायाम से शरीर स्वस्थ तो रहता ही है, फेफड़ा, पेट की बीमारियों के इतर असाध्य रोगों के उपचार में भी यह गजब का लाभ देता है. पद्यामसन या सुखासन में बैठकर व्यक्ति दाहिने हाथ के अंगूठे से नाक का दांया छिद्र बंद करता है और बायें छिद्र से जोर से सांस लेता है. सांस लेने के बाद बांये छिद्र से सांस छोड़ता है. फिर दायें छिद्र से ही सांस लेता है और उसे बांये छिद्र से छोड़ता हैं. इस प्रणायाम को कम से कम पांच मिनट और रोग उपचार की दृष्टि से ३० मिनट तक करना चाहिए. नाक के छिद्र से दो से ढाई सेकेंड में सांस लेना और इतने ही समय में सांस छोड़ना चाहिए.

**भ्रामरीः** भ्रामरी बहुत ही आसान प्राणायाम है. इसे भी पद्यासन या सुखासन में बैठ कर किया जाता है. सबसे पहले हम अंगूठ से कान बंद कर लेते है. अंगूठ की बगल वाली उंगली को भौं के ऊपर ललाट पर रखते हैं उसके बाद को तीनों उंगली (मध्यमा, अनामिका और कनिष्ठा) से आंख बंद कर लेते है. ऐसा करने के बाद जोर से सांस अंदर लेते और मुंह बंद किये हुए नाक से ओम शब्द का उच्चारण करते हैं. ऐसा करते वक्त सिर में भंवरे के समान गुंजन होता है. इसीलिए इसे भ्रामरी कहते हैं. इसे पांच से ११ बार तक करना चाहिए. इससे सर दर्द व सिर की बीमारियों में अप्रत्याशित लाभ होता है. स्मरण शक्ति बढ़ती है. दूसरे कई अन्य लाभ होते हैं.

**बाह्य प्राणायामः** इस प्रणायाम में व्यक्ति अपनी सांस पूरी तरह पेट को पीठ से सटाता है.

पेट के निचले हिस्से को सिकोड़ता है, उसके बाद ठुड्डी को छाती से सटाया जाता है. इस प्रकार तीन चक्र बन जाते हैं.

**अग्निसारः** इस प्राणायाम में पूरी तरह सांस भरकर सारी सांस बाहर निकाल दी जाती है. उसके बाद पेट को पीठ से सटाकर पेट को ऊपर-नीचे किया जाता है. एक तरह से पेट का मंथन किया जाता है. यह क्रिया भी चार से पांच बार की जाती है. इस क्रिया को करने से यकृत, अग्नयाशय, प्लीहा, फेफड़े और अन्ययाशय, प्लीहा, फेफड़े और अन्य उदर अंगो का व्यायाम हो जाता है. पेट संबंधी कोई भी रोग पनम नहीं सकता. शरीर के अंदर हारमोन की विकृति मिटती है तथा जिन अंगो में संक्रमण की आंशका हो, प्राणायाम के करने से वह आशंका पूरी तरह मिट जाती है.

**उज्जयीः** इस क्रिया में पूरी तरह सांस भरकर दोनों हाथ कानों से सटे होते हैं.

फिर सांस छोड़ते हुए कमर से नीचे झुकते हुए ऊपर उठाये जाते हैं. दोनों हाथ कानों से सटे होते है. फिर सांस छोड़ते हुए कमर से नीचे झुकते हुए ऊपर उठे हुए दोनों हाथों को आगे की ओर जमीन से सटाया जाता है.

फिर सांस लेते हुए एवं छोड़ते हुए यही क्रिया हाथ उठाये दायी और बायीं ओर दुहरायी जाती है. फिर अंत में दोनो हाथ उसे नीचे लाकर सांसे छोड़ दी जाती है. इस क्रिया से शरीर के ऊपर अंगो की क्रियाविधि दुरूस्त हो जाती है.

# सुन्दरता

✍डॉ० पूरन सिंह, नई दिल्ली-८

उस दिन बच्चों के स्कूल में वार्षिकोत्सव था. बच्चे स्कूल बस में पहले ही विद्यालय चले गए थे. मैं जब वहाँ पहुँचा तो कार्यक्रम शुरू हो गय था. कुछ महिलाएं कार्यक्रम से दूर खड़ी आफिस में बातें कर रही थी कि अचानक एक छोटा सा मासूम बच्चा बालकनी से नीचे गिर गया था. गिरते ही उसके सिर से खनू बहने लगा था. मैं भागकर उसके पास पहुंच गया था और उसका सिर अपनी गोद में रखकर खून बंद करने का प्रयास कर रहा था. मेरी सफेद शर्ट खून से लाल हो गई थी. तब तक वे सभी महिलाएं भी वहीं आकर गोला बनाकर खड़ी हो गई. मैं सबसे यही कह रहा था कि कोई प्लीज मेरी मदद करो. कुछ कपड़ा आदि दे दो तो मैं इस बच्चे के सिर पर लगाकर दबा लूं ताकि ब्लड आना बंद हो जाए. मेरी इस बात पर किसी ने ध्यान नहीं दिया था. उल्टे बाते ही किए जा रही थी.

“आजकल के बच्चे बड़े शैतान हो गए है.” बालों को पीछे उछालती हुई यह आवाज एक सुंदर सी महिला की थी जो हाथ में मोबाइल फोन पकड़े थी और अपनी जींस पर बार-बार उसको रगड़ रही थी. “हाउ इडिएट्स दीज चिल्ड्रन आर” आखों पर काला चश्मा लगा और गहरी सी लिपिस्टिक वाली यह महिला देखने में ही कोई रहीस दिखाई दे रही थी.

“प्रिंसिपल की शिकायत करनी होगी, स्कूल के मैनेजमेंट से. बच्चों का कोई ध्यान ही नहीं रखता.” कुछ-कुछ नेताओं के अंदाज में बात करने वाली यह महिला सिफॉन की साड़ी पहने सलीके से खड़ी थी.

मैं बार-बार यही कह रहा था,“प्लीज कोई मेरी हेल्प कर दो बच्चे को बहुत ब्लड निकल रहा है.” मेरी बात उनमें से किसी महिला ने नहीं सुनी. तभी न जाने कहां से एक महिला आयी. बिल्कुल काली सी महिला थी उसके चेहरे पर चेचक के दाग थे. उसने साड़ी को बड़े सलीके से बांधा हुआ था. साड़ी भी बहुत कीमती रही होगी. ऐसा उसको देखकर लग रहा था. देखते ही देखते उसने अपनी साड़ी का पल्लू फाड़ डाला और उसकी कई करतें बनाकर उस बच्चे के माथे पर रखकर बांधने लगी थी. मैं उस महिला को बड़ी तत्परता से देखता रहा और उसके चेहरे को निहारता ही रहा. तभी वह बोल पड़ी थी. “क्या देख रहे है भाई साहब?”

“दुनिया में कोई इतना भी सुन्दर हो सकता है” मैंने कहा था जिसको उस महिला ने अनसुना कर दिया था और बच्चे को मेरी गोद से लेकर अपनी गोद में ले लिया था और अस्पताल की ओर चलने लगी थी. मैं सम्मोहित सा उसके पीछे पीछे चलने लगा था. पास खड़ी वे सभी महिलाएं मुँह बनाती हुई वहां से चली गई थी.

++++++++++++++++++++++

## जिन्दगी जीने का मजा आ जायेगा

जिस दिन प्रभु से, नाता जुड़ जायेगा,  
जिन्दगी जीने का, मजा आ जायेगा।  
सांसारिक वस्तुओं में, लेगें क्षणिक तो  
साथ में गहन दुख, दर्द जुड़ जायेगा  
भौतिक सुखो को, भोगते ही भोगते  
निश्चित ही एक दिन, मन ऊब जायेगा।  
घर; परिवार, जन अपने पराये  
स्वास्थ के मीत है, समझ आ जायेगा  
रहता प्रभू का हर, दिल में निवास है  
ज्यों ही हमारा ये, भाव जग जायेगा  
सच्चा सुख आनंद, पाना जो चाहते  
प्रभू के ही चरणों में, हमको मिल जायेगा  
मस्ती में डूबे, रहेंगें हम हरदम  
सिमरन निरंतर, प्रभू का हो जायेगा  
तब हम प्रभू का, प्यार पा जायेगें  
आवागमन का भी, फेरा मिट जायेगा।

**ठाकुरदास कुल्हारा**, जबलपुर, म.प्र.

## यह कैसा सम्बन्ध

मन मिले  
न मिले  
साथ यूं ही  
चल दिए  
वक्त गुज़ारी के लिए  
कर लिए अनुबन्ध  
यह कैसा सम्बन्ध  
न दूरियों की कसक  
न नजदीकियों का अहसास  
करें दिखावा ऐसे  
जैसे हो बहुत खास  
कुटल चाल चलते  
करके आलिंगन बद्ध  
यह कैसा सम्बन्ध  
न मिलने की खुशी  
न बिछुड़ने का ग़म  
ऐसे रिश्तों में  
होता कितना दम  
जुबां है खामोश  
पर मन में द्वन्द  
यह कैसा सम्बन्ध  
दुःखद अनुभूतियां  
डंसती स्मृतियां  
उड़े रिश्तों के मकरंद  
सवाल करे वेदना  
यह कैसा सम्बन्ध

**मीरा सिंह‘मीरा’**,बक्सर,बिहार

**मा०मैसूर हिंदी प्रचार परिषद**  
५८, वेस्ट ऑफ कार्ड रोड, राजाजी नगर, बेगलूर-५६००१०

## राजरानी चाय, जरा हंस दो मेरे भाय

☠ जासूस- सच-सच बताओ तुमने उसकी जेब में हाथ क्यों डाला?
नानू-जी, ठंड लग रही थी, बस इसीलिए.

☠ नोनू- अपने देश में मृत्यु की औसत दर क्या है?
मोनू-शत-प्रतिशत.
नोनू-यहां हर मनुष्य जो पैदा होता है, अंत में मर जाता है.

☠एक नेता की पत्नी ने अपनी सहेली से कहा-मेरे पति जरा सा बुखार होने पर भी इतना कराहते है कि मैं फैसला नहीं कर पाती कि डॉक्टर को बुलाऊं या पत्रकार को.

☠यह बच्चा रो-रोकर पूरे कार्यक्रम में विघ्न डाल रहा है. इसकी मां को क्यों नहीं पकड़ा देते है?-एक सज्जन बोले.
'कार्यक्रम में तब भी विघ्न पड़ेगा, जब मैं बच्चे को इसकी मां को सौप दूंगा. इसकी मां का ही गीत आप सातवी बार सुन रहे हैं.' दूसरे सज्जन ने खींझते हुए कहा.

☠क्रिकेट का एक खिलाड़ी खेलते-खेलते घायल हो गया. डॉक्टर ने उसके जख्म पर तीन टांके लगाए और इसके लिए उससे तीन सौ रुपये मांग लिए.
'३०० सौ रुपए केवल तीन टांकों के लिए!' खिलाड़ी ने हैरानी से कहा.
'हां.हां..हां तीन सौ रुपए.' डॉक्टर का उत्तर था.
'चलो, अच्छा है तुम मेरे दर्जी नहीं हो.' खिलाड़ी धीरे से बुदबुदाया.

☠गौरव- अपना बर्थ डे बताओ.
टीना- १२ अगस्त.
गौरव- और साल.
टीना-हर साल.

☠बेरोजगार- जब आप किसी को नौकरी दे नहीं सकते, तो यह रोजगार कार्यालय खोल क्यों रखा है.
रोजगार अधिकारी- कम से कम इससे मेरी तो नौकरी तो बनी हुई है.

☠राधिका-तुम्हारे पति को पुलिस क्यों पकड़ कर ले गई.?
मानू-कुछ खास नहीं. सरकार को यह पसंद नहीं आया कि ये नोट छापने में उनका कंपीटीशन करें.

☠रमेश-मैं अपने नौकर से तंग हूं. वह पिछले तीन साल से हर तीसरे महीने तनख्वाह बढ़ाने की जिद करता है.
नरेश- आखिर वह इतने पैसे का करता क्या है?
रमेश- पता नहीं, मैंने आज तक उसके पैसे बढ़ाए ही नहीं.

☠डॉक्टर- आखिर तुम समय से दवा क्यों नहीं खाते हो?
मरीज-जी मेरी घड़ी खराब है इसलिए.

☠दिवेश-तुमने यह ३००० रुपये दे कर मुझे जन्म-जन्म का कर्जदार बना लिया है.
गौरव- लेकिन मुझे तो यह कर्ज इसी जन्म में वापस चाहिए.

☠पहलवान- मैंने इस प्रतियोगिता में अच्छे-अच्छों को धूल चटा दी.
दोस्त- लेकिन मैंने तो सुना था कि प्रतियोगिता गद्दों पर हुई थी.

☠एक शराबखाने के बाहर लगा बोर्ड-'यदि आप शराब पीने के बाद सब कुछ भूल जाते हैं, तो कृपया पीने से पहले ही दाम चुका दें.'


**राजा हो या रंक, सबकी पसंद राजरानी चाय**

हमारे अन्य प्रोडक्टः

**राजरानी सब्जी मसाले, राजरानी हल्दी, राजरानी लाल मिर्च, राजरानी सेवई, राजरानी ऑवला चूर्ण, राजरानी चटपटा, राजरानी हींग, राजरानी मीट मसाला,**

निर्माताः श्री पवहारी इण्डस्ट्रीज,इलाहाबाद

**चुटकुले भेजिए और पाइए राजरानी चाय के पैकेट मुफ्त**

अच्छे चुटकुले भेजने वाले व्यक्ति को राजारानी चाय की तरफ से ५ किलों, २ किलों, १ किलों, ५०० ग्राम, २५० ग्राम के चाय पैकेट मुफ्त दिए जायेंगें.


### वनौषधि माला साप्ताहिक
संपादकः**महावीर आजाद शास्त्री**
एम.सी. कॉलोनी, चरखी दादरी, जिला-भिवानी, हरियाणा
++++++++++++++++++++++

### बाई सा
संपादकः **श्रीमती सरिता भूतड़ा**
२६, डाबरी पीठा, उज्जैन, म.प्र.
++++++++++++++++++++++

### पनघट
संपादकः **श्री जवाहर लाल बेकस**
रुपाकंन, पो.बा. २०३, पटना-१, बिहार
++++++++++++++++++++++

### कलमदंश
प्र.संपादक **जनाब अख़ग़र पानीपती**, २३६३-६४, न्यू हाउसिंग बोर्ड, पानीपत, १३२१०३, हरियाणा
++++++++++++++++++++++

### सहकार
संपादकः **श्री भानुदत्त त्रिपाठी**
हिन्दी सहकार संस्थान, ३६२, सिविल लाईन्स, कल्याणी, उन्नावं-२०६८०१
++++++++++++++++++++++

### दिव्य प्रभा
प्र.सपादकः**श्री मुनीर बक्श आलम**
जे-१४६, नयी कॉलोनी, चुर्क, सोनभद्र, २३१२०६, उ0प्र0

# अब तो ठंढी हो चली जीवन कर राख

डॉ० श्रीमती तारा सिंह की उपरोक्त कविता संग्रह मुझे अवलोकनार्थ प्राप्त हुआ है, जिसे मैं अपना सौभाग्य ही मानता हूँ. भिन्न-भिन्न प्रान्तों से हिन्दी साहित्य की महान सेवाओं के फलस्वरुप चालीस उच्चतर एवं उच्चतम सम्मानों से विभूषित बहन डॉ. तारा सिंह हिन्दी साहित्याकाश की साधारण तारा नहीं वरन ध्रुवतारा हैं.

अस्तुः अब तो ठंढी हो चली जीवन की राख' श्रीमती डॉ. तारा सिंह की मर्माहत, कोमल एवं जीवन पर्वो पर टिकती हुई, आगे के पड़ावों की ओर जाने वाली सांसारिक पीड़ाओं का संगम है. इस कृति में, मानवीय ऊर्जा की पराकाष्ठा जो युवावस्था में ही संभव है, स्पष्ट झलकती है. युवावस्था में मानव की इच्छाशक्ति पल-पल एवं पग पर साकार होती चलती है जो वृद्धावस्था के आरंभकाल से शनैः शनैः ठंढी अथवा मन्द पड़ने लगती है. इस ऊर्जा का शिथिल हो गया रुप निष्प्रभावी एवं आधारहीन होने लगता हैः-

वर्षो बीत गए उस अग्नि प्रलय को
जिसने जला-जलाकर भस्मसात कर दिया था
मेरे कुसुमित हृदय को, अर्द्धस्फुटित कलियों को
अब तो ठंढ़ी हो चली जीवन की राख
फिर भी यथावत है हृदय का वह भूभाग
जहॉ कभी हुआ था भीषण अग्निदाह और
आत्म प्रताड़ित होकर किया था मैने आत्मदाह।

जीवन यात्रा का 'यौवनावस्था की स्मृतियॉ किस आश्चर्यजनक हृदयोद्भावों में वर्णित है, देखिए-

कभी पारिजात मंदार की लताओं की तरह
सुंदरता मेरे अंग-अंग से लिपटी रहती थी
ज्वलित प्रबालों के पर्वत पर भी हिम कुसुम बनकर
रक्तसिक्त नीलकमल सा खिली रहती थी
ज्वलित प्रबालों के पर्वत पर भी हिम कुसुम बनकर
रक्तसिक्त नीलकमल सा खिली रहती थी

वाह, क्या मूर्धन्य अभिव्यक्ति है जीवन में परिवर्तन की. डॉ. तारा सिंह जी का हृदय मानवीय संवेदनाओं का मानो समुद्र है. जीवन यात्रा में पग-पग पर होते खट्टे-मीठे अनेकों सुख-दुख सहेजे अनुभव लेखनी द्वारा लिपिवद्ध किए गए हैं. 'तरसा करते थे जो मुझे देखने सालों भर' शीर्षक कविता में कवयित्री की मर्मपीड़ा किस प्रकार पाठकों के हृदय को छलनी करती प्रतीत होती है, जब कवयित्री अपने स्वर्गीय पिता को अपने गांव में जाकर उन्हें नहीं देख पाती है; मात्र उनकी स्मृति छॉह को दृष्टि अनुभव करती है-

हर साल की भॉति इस साल भी मैं,
दुर्गा-पुजा के अवसर पर गई थी गॉव
सब कुछ जस का तस था, अगर कुछ नहीं था तो वह थी पिता जी छॉह
तरसा करते थे जो मुझे देखने सालों भर, खत पर खत लिखा करते थे.
यह जानने कि तारा तुम कब आ रही हो घर।

एक वृद्धा की पीड़ा तथा दुनिया में कौन किसका; किस प्रकार लेखनी ने पाठकों को रुला दिया है. यहॉ काव्य कौशल ही नहीं, मानव हृदय का करुण क्रन्दन तथा स्वार्थरत विश्व का सच्चा मानचित्र दिखला देने की क्षमता भी है, वास्तव में कवयित्री की इस कृति में सन्निहित सभी कविताएं स्तुत्य है तथा प्रसाद गुणातीत भी. श्रीमती तारा सिंह की लेखनी काव्य-जगत में बौद्धिक क्रांति की सृष्टा सिद्ध होने जा रही है. निकट भविष्य में रचना संसार नभ शीर्षस्थ होगा.

**समीक्षकः** ओम प्रकाश 'विकल'
**पुस्तकः** अब तो ठंढी हो चली जीवन की राख
**कवयित्रीः** डॉ. तारा सिंह


## विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित पुस्तक

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. मधुशाला की मधुबाला | : | लेखक : राजेश कुमार सिंह | मूल्य 10.00 |
| 2. अपराध | : | लेखकः राजेश कुमार सिंह | मूल्य : 10.00 |
| 3. सुप्रभात | : | दस रचनाकारों का संग्रह | मूल्यः 10.00 |
| 4. निषाद उन्नत संदेश | : | लेखकः चौ0 परशुराम निषाद | मूल्यः 10.00 |
| 5. अदभुत व्यक्तित्व | : | लेखकः गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी | मूल्यः 10.00 |

पुस्तकों के लिए भेजें/लिखेंः मनीआर्डर/डी.डी.
सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी-93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

प्रस्तावित

# स्नेहाश्रम

## आपसे सहयोग की अपील करता है

१.**स्नेहालय** (अनाथाश्रम एवं वृद्धाश्रम): समाज में तिरस्कृत वृद्धजनों व असहाय बच्चों के रहने खाने, अध्ययन, अध्यापन की सम्पूर्ण व्यवस्था से परिपूर्ण

२.**हिन्दी महाविद्यालयः** यह संस्थान अध्यनरत छात्र/छात्राओं को अति आधुनिक पद्धति से शिक्षित करेगा. साथ ही यह पूर्ण प्रयास करेगा कि छात्रों को रोजगार मिल सके.

३.**चिकित्सालयः** १०० बिस्तर का अत्याधुनिक उपकरणों से परिपूर्ण आयुर्वेद/एलोपैथ/योग से चिकित्सा की जायेगी जिसमें गरीबों का निःशुल्क इलाज किया जाएगा.

४.**पुस्तकालयः** २०० लोगों के अध्ययन करने की सुविधा से परिपूर्ण ऐसा पुस्तकालय होगा जिसमें विश्व के लगभग सभी बड़े लेखकों की पुस्तकें उपलब्ध होगी, साथ ही पाठ्य पुस्तकें भी उपलब्ध होगी.

५.**प्रकाशनः** इसमें धार्मिक, सामाजिक, साहित्यिक व सभी प्रकार के प्रकाशन की सम्पूर्ण व्यवस्था होगी.

६.**गौशालाः** इसमें लगभग दस हजार गायों को रखने की व्यवस्था होगी. साथ ही गौमाता के त्याज्य सामग्री को औषधीय उपयोग में लाने हेतु शोध/अनुसंधान की भी व्यवस्था होगी.

**नोटः**

१. जो भी व्यक्ति/संस्था १० लाख या इससे ऊपर का सहयोग जिस मद में देगी उसके नाम पर उसका नाम रक्खा जाएगा.

२. १ लाख तक का सहयोग देने वाले व्यक्ति के नाम पर कमरे का नाम, पुस्तकालय में ५ लाख देने पर पुस्तकालय का नाम उसके नाम पर कर दिया जायेगा.

३. आप सहयोग सीमेन्ट, बालू, ईट, छड़ व अन्य उपयोग की सामग्री देकर भी कर सकते हैं.

४. इन संस्थाओं को संचालन एक कमेटी के तहत किया जाएगा.

५. जनसहयोग द्वारा, जनसहयोग से, जन के लिए

**सहयोग के लिए लिखें या मिलेंः** सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान/
सचिव, जी.पी.एफ. सोसायटी
एल.आई.जी-१४४/६३, सेक्टर-२, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
email: gpfsociety@rediffmail.com,sahityaseva@rediffmail.com

डाक पंजीयन संख्याः एडी.306/2006–08 R.N.I.N0.-UPHIN2001/8380

# साहित्य श्री सम्मान १० हेतु प्रविष्टिया आमंत्रित

१. **साहित्य श्री सम्मानः** (रु०५००१/-) एक कहॉनी तीन प्रतियों में.

२. **डॉ. रामकुमार वर्मा सम्मानः** (रु०२५००/-) एक नाटक तीन प्रतियों में

३. **बाल श्री सम्मानः**(रु०११००/-) एक बाल कहॉनी तीन प्रतियों में

४. **कैलाश गौतम सम्मानः** कोई एक हास्य/व्यंग्य कविता तीन प्रतियों में

५. **डॉ. किशोरी लाल सम्मानः** श्रृंगार रस पर आधारित एक रचना तीन प्रतियों में

६. **राजभाषा सम्मानः** यह सम्मान सरकारी/अर्द्धसरकारी विभागों/उपक्रमों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों को राजभाषा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए दिए जाएगें.

७. **समाज श्रीः** गत ५ वर्षो के सामाजिक कार्यो का सम्पूर्ण लेखा-जोखा तीन प्रतियों में

८. **सम्पादक श्रीः** पत्रिका के कोई तीन अंक तीन प्रतियों में (निःशुल्क)

९. **युवा पत्रकारिता सम्मानः** पत्रकारिता के क्षेत्र में किए गये कार्यो का सम्पूर्ण विवरण तीन प्रतियों में

१०.**राजभाषा सम्मानः** यह अहिन्दी भाषी क्षेत्र के किसी विद्वान द्वारा हिंदी के उत्थान के लिए किए गए कार्य के लिए दिया जाएगा. सम्पूर्ण जानकारी सहित लिखें.

**१० मानद उपाधियांः** सम्पूर्ण साहित्यिक उपलब्धियों का लेखा जोखा तीन प्रतियों में

११. **विश्व हिंदी साहित्य सेवा अंलकरणः** लेख/संस्मरण/व्यंग्य/नाटक/उपन्यास तीन प्रतियों में

**विशेषः** १. अपनी रचनाओं पर अपना नाम/पता न लिखें। मौलिकता के लिए केवल हस्ताक्षर करें।
२. सभी प्रविष्टियों के साथ एक पोस्ट कार्ड/एक टिकट लगा जवाबी लिफाफा भेजें।
३. प्रविष्टि के साथ १००/-रुपयें का धनादेश भेजना अनिवार्य होगा. धनादेश/बैक ड्राफ्ट सचिव के नाम से ही भेजें. चेक स्वीकार्य नहीं होगें. ४. प्रविष्ट्रियों के साथ सचित्र स्वविवरणीका अवश्य भेजें.

**अंतिम तिथिः ३० नवम्बर २००६**

**लिखेंः गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी**
सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

* संस्थान का निर्णय अंतिम एवं सर्वमान्य होगा. किसी भी प्रकार के विवाद में न्यायालीय क्षेत्र इलाहाबाद होगा. सम्मान राशियों को उपहार/नगद व कम अधिक करने का अधिकार सुरक्षित रहेगा.

स्वामी, संपादक, प्रकाशक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई बाग से मुद्रित कराकर एलआईजी-६३, नीम सराय कॉलोनी, मुण्उेरा, इलाहाबाद से प्रकाशित किया. सम्पादकः गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी